गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017 सेवा में,

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

लेट पोस्टिंग

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 7 अंक : 7 पृष्ठ संख्या : 12 माह – 15 मई 2016 सहयोग राशी – आजीवन सदस्य बनें ।

अद्भुत महोत्सव – पाषाण से परमात्मा बनाने का

अर्चना जैन, इन्दौर । इन्दौर के पूर्वी क्षेत्र में स्थित उदय नगर में नवनिर्मित मन्दिर में भव्य पंचकल्याणक पाषाण से निर्मित भगवान (1008 श्री मूलनायक चंद्रप्रभु एवं 1008 श्री अभिनन्दननाथ भगवान एवं कई क्षेत्रों से आई प्रतिमाओं सहित) 17 से 23 अप्रैल तक 108 मुनिश्री समयसागर जी महाराज ससंघ एवं 105 आर्यिका आदर्शमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में भव्य पंचकल्याणक आयोजित हुआ । आयोजन का मुख्य निर्देशन प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. विनय भैया एवं सह प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. सुनील भैयाजी ने कुशलता पूर्वक किया । कार्यक्रम का शुभारम्भ 17 अप्रैल को प्रात: घटयात्रा के साथ हुआ । घटयात्रा उदय नगर से प्रारम्भ होकर कनाड़िया रोड़ व गोयल नगर मंदिर होते हुये उदय नगर पहुँची । विभिन्न क्षेत्रों के महिला मण्डल और बालिका मंडल ने अपनी निर्धारित वेशभूषा के साथ दिव्यघोष से उत्साह पूर्वक घटयात्रा की शोभा बढ़ाई । गोयल नगर से 1008 श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा भी जुलूस के साथ उदय नगर मंदिर पहुँची । कार्यक्रम का आरम्भ ध्वजारोहण के साथ हुआ । ऐतिहासिक पंचकल्याणक में नगर व बुंदेलखंड के विभिन्न नगरों से पधारें श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, लगभग 1008 इन्द्र-इन्द्राणियों के जोड़े इस कार्यक्रम में शामिल हुये । प्रतिदिन नित्य नियम पूजा, मुनिश्री व माताजी के प्रवचन फिर आहारचर्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। 18 अप्रैल को पात्र शुद्धि, सकलीकरण एवं याग मण्डल विधान हुआ । दोपहर में भी मुनिश्री समयसागरजी व आर्यिका माताजी के प्रवचनों का लाभ भी जनसाधारण को मिला । शाम को अन्य कार्यक्रमों के साथ इन्द्रसभा का मंचन हुआ। अगले दिन मुख्य कार्यक्रम में माता मरुदेवी की गोद भराई का अभूतपूर्व कार्यक्रम हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ । सायंकालीन आरती पश्चात महाराजा नाभिराय के दरबार, माता के 16 स्वप्नों का फल आदि का प्रभावपूर्ण मंचन हुआ । 19 अप्रैल को महावीर जयंती के अवसर पर भव्य शोभा यात्रा हर्षोल्लासपूर्वक निकाली गयी । 20 अप्रैल को प्रात: 5.16 मिनट पर तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ, हजारों की संख्या में श्रद्धालु समय पूर्व पांडाल में आ गये थे, सभी ने जन्म कल्याणक की खुशियां मनाई । सौधर्म इन्द्र द्वारा तीर्थंकर बालक को विशाल जुलूस के रुप में पाण्डुकशिला पर ले जाकर अभिषेक करना, शचि इन्द्राणी द्वारा बालक को सजाना, मंगल गीत गाना आदि क्रियाएं भाव विभोर कर देने वाली थी । शाम को पलना झुलाना, बाल क्रीड़ा देखकर लगा हम चतुर्थ काल में ही पहुँच गये है, जहां साक्षात प्रभु का जन्म हुआ । 21 अप्रैल को नित्य पूजा पश्चात दोपहर को तीर्थंकर कुमार का राज्याभिषेक, महामण्डलेश्वर राजा द्वारा श्री आदिनाथ की अधीनता स्वीकारते हुये भेंट लाना, राजा द्वारा असि, मसि, कृषि आदि षट्कर्मों का उपदेश देना, सुखपूर्वक

शेष... पृष्ठ 4 पर

श्री 1008 सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव संपन्न

सत्येन्द्र जैन, अहमदाबाद । गुजरात की धर्मप्राण महानगरी अहमदाबाद के रामेश्वर पार्क में 17 से 22 अप्रैल तक प्रथम बार मांगलिक, अद्भुत, अलौकिक भवन चतुर्मुखी समवशरण एवं इन्द्र मानस्तंभ सहित पंचकल्याणक महोत्सव पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के परम शिष्य प्रखर वक्ता मुनि श्री 108 विश्रुत सागर जी महाराज एवं मुनि श्री विश्वाससागरजी महाराज ससंघ के पावन प्रेरणा के साथ साआनंद संपन्न हुआ । पंचकल्याणक में अद्भुत श्री 1008 सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ स्वामी, 1008 आदिनाथ भगवान, 1008 नेमिनाथ भगवान, 1008 मुनिसुव्रत भगवान, 1008 महावीर स्वामी भगवान एवं भव्य अलौकिक इंद्र मानस्तंभ की भव्य रचना को विराजमान किया गया, जिन शासन की मंगलमय प्रभावना देखकर सभी भाव विभोर हो गये । इस महामहोत्सव के अपूर्व अवसर पर भगवान के साक्षात पंवकल्याणक को निहार कर समस्त जैन समाज ने अपने जीवन को सफल किया । पंचकल्याणक की प्रतिष्ठा संहिता सूरी प्रतिष्ठा तिलक श्री पंडित विनोद कुमार एवं श्री पंडित सनतकुमारजी रजवास सागर के द्वारा की गई । प्रतिष्ठा में बड़ौत से अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री डॉ. श्रेयांस कुमार जी का विशेष सानिध्य प्राप्त हुआ । 17 को ध्वजारोहण, 18 को गर्भ कल्याणक, 19 को जन्म कल्याणक, 20 को तप कल्याणक, 21 को ज्ञान कल्याणक एवं 22 को मोक्ष कल्याणक का आयोजन हुआ ।

प्रतिष्ठा में दिल्ली से पधारे मनोज शर्मा के सांस्कृतिक कार्यक्रम 'कमठ का उपसर्ग' व 'कन्या भ्रूण हत्या' इत्यादि कार्यक्रम से समाज को मंत्रमुग्ध किया गया । संगीतकार हेमंत कुमार भोपाल वालो ने अपने अंदाज में लोगो को धर्म ध्यान में तल्लीन कर दिया ।

19 को पंचकल्याणक महोत्सव में पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक एवं महावीर जयन्ती दोनों कार्यक्रम का आनंद अहमदाबाद की जैन समाज ने लिया । जिसमें 10000 से भी अधिक जैन समाजजन एकत्रित हुए एवं आस पास के कई क्षेत्रों के मंदिर से भव्य झांकी कार्यक्रम स्थल के पंडाल

शेष... पृष्ठ 4 पर

हमारी सदैव यही भावना है कि हम श्रीजी, आचार्यश्री व मुनिराजजी के फोटो प्रकाशित न करे ताकि हमारे इस माध्यम से हमारे पूज्यों की किसी भी तरह की अवमानना न हो, यदि इस प्रयास में कोई त्रुटि रह जाती है तो हम आपसे क्षमाप्रार्थी है ।

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है।

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली

प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9407453066

सह संपादिका
श्रीमती अर्चना अजय जैन, 9827796013
श्रीमती अनुपमा रजनीश जैन, 9009066884

कोषाध्यक्ष –
सुधेश कुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक
राजेन्द्र कुमार जैन, सायकलवाले, 9425353972
खुशालचन्द जैन, 9302123879
कोमलंचद जैन, 9329524227

(संयोजक एवं प्रकाशक)
बाहुबली जैन, 9827247847

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
आजीवन शुल्क (अ.जा.)	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855 IFSC Code: SBIN0030134 में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट – 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	3000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	200/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड़, इन्दौर पर भेंजे।

स्वर्गीय श्री कन्छेदीलाल जैन का जीवन परिचय

श्री कन्छेदीलाल जैन का जन्म ललितपुर के देलवारा ग्राम में पिता श्री परमानंद जी एवं माता श्रीमति तुलसाबाई के यहां हुआ था । आपने शासकीय सेवा मध्यप्रदेश वेयर हाऊस कार्पोरेशन में निष्ठापूर्वक कार्य का संपादन किया । आप कार्य के प्रति सदैव सजग व उत्तरदायी रहे । श्री कन्छेदीलाल जी मृदभाषी एवं सुभासी व्यक्तित्व के धनी होकर समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी रहे । जो भी कार्य उन्हें दिया गया वह उन्होने सहजता एवं उदार मन से पूर्ण किया । आपने समाज द्वारा संचालित केशर बाई औषधालय, सागरमल साहित्य विक्रय केन्द्र एवं पक्षी विहार संस्था में कोषाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहकर अपने कर्तव्यों का सहजता से निर्वाहन किया । वर्ष 2011 मे किरी मोहल्ला में समाज के नवनिर्मित जिनालय के पंचकल्याणक में आपको कोषाध्यक्ष का दायित्व सौंपा गया था जिसे आपने बखूबी निभाकर अंतिम दिवस को आय व्यय का पत्रक सभा के सामने प्रस्तुत कर दिया । हाल ही में 1008 चंदप्रभ जिनालय में सामूहिक सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन हुआ, जिसमें आपने राजा चक्रवर्ती के रुप में अंनतानंत सिद्धों की आराधना की । आप नित्य प्रात:काल 6 बजे मंदिरजी में आकर पूजा अभिषेक की पूर्ण व्यवस्थाएँ सहज उपलब्ध कराने की व्यवस्था करते थे एवं अन्य लोगों को भी इसी प्रकार के कार्य करने हेतु प्रेरित करते रहते थे । प्रति रविवार को मंदिरजी में आयोजित होने वाला 1 घंटे के भक्ताम्बर पाठ का संचालन भी आपके द्वारा ही संपादित किया जाता रहा ।

2 अप्रैल को आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हुआ और आपको आगामी जांच हेतु भोपाल ले जाया गया जहां 3 अप्रैल की प्रात: 11 बजे भोपाल में ही देहांत हो गया । श्री कन्छेदीलालजी के निधन से पूरे समाज में शोक की लहर दौड़ गई । समाज के मुखपत्र 'गोलालारीय दर्शन' की प्रगति में आपका बड़ा योगदान रहा है, आपने समय–समय पर मार्गदर्शन प्रदान कर पत्रिका को नवीन ऊचाईयां प्रदान की है । आप विदिशा नगर के प्रांतीय प्रतिनिधि के रुप में नहीं वरन् हमारे मार्गदर्शक के रुप में सदैव चिरस्मरणीय रहेंगे । । विवाह योग्य बच्चों की प्रथम पुस्तिका 'प्रयास' के प्रकाशन की प्रेरणा भी आप ही ने दी थी। आपकी कमी विदिशा समाज को ही नहीं बल्कि संपूर्ण गोलालारीय समाज को रहेगी । गोलालारीय दर्शन पत्रिका के लिए यह सबसे बड़ी क्षति है हमने इस पत्रिका की उन्नति का एक सच्चा मार्गदर्शन खो दिया है ।

स्वर्गीय डॉ. राजेन्द्रकुमारजी जैन का जीवन परिचय

डॉ. राजेन्द्रकुमार जैन का जन्म 30.08.48 को बुढ़ार में हुआ । आपने अपनी शिक्षा इन्दौर से कर जन्मस्थली बुढ़ार में 'सेवालय' चिकित्सालय खोलकर जनसेवा कार्य पूर्ण मनोयोग से प्रारंभ कर अंतिम समय तक मानव सेवा करते रहे । लायंस क्लब से जुड़कर समय समय पर आपने चिकित्सा, शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में जाकर नगर वासियों की मदद की । स्थानीय समाज व राजनैतिक संगठन से आप सदा जुड़े रहे । भारतीय जनता पार्टी के चिकित्सा प्रकोष्ठ के आप अध्यक्ष रहे । बुढ़ार डिग्री कॉलेज में आपने 10 वर्षों तक जन भागीदारी अध्यक्ष के रुप में सेवाएं प्रदान की । अखिल भारतीय गोलालारीय परिषद के आप उपाध्यक्ष रहे । आपका निधन 3.01.2016 को हो गया, जिससे स्थानीय समाज में शोक की लहर फैल गयी ।

गोलालारीय परिषद की द्वितीय बैठक में आपने संगठन को सशक्त व गतिशील बनाने के लिए प्रत्येक नगर / गांव से क्रियाशील सदस्यों की नियुक्ति पर जोर देकर कहा था कि संगठन को यदि सशक्त बनाना है तो उसमें युवा पीढ़ी के उन नवयुवकों को जोड़ा जाना चाहिए जो अपने समाज के प्रति कुछ करने का जज़्बा दिल में रखते है; हम सभी उनके विचारों से काफी प्रभावित हुये थे ।

वर्ष 2009 में जब इन्दौर में गोलालारीय परिषद की बैठक आयोजित हुई थी तब भी आप अस्वस्थ होने के पश्चात भी इस सभा में सपत्नीक पधारे थे । आपने परिषद की गतिविधियों की शिथिलता पर अप्रसन्नता जाहिर कर संगठन को पुन: जीवित करने की भावना पर जोर दिया । समाज में हो रहे अंतर जातीय विवाह पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय व स्थानीय संगठन को सुदृढ़ कर इस समस्या को बहुत हद तक कम किया जा सकता है । आपने समय समय पर समाज हित में अनेक मंचों से अपने विचार रखें है आप सदैव समाज के हितार्थ कार्य करते रहे है। आपका योगदान हमेशा अस्मरणीय रहेगा ।

रक्तदान शिविर आयोजित

मंजू जैन, ललितपुर । महावीर जयन्ती के अवसर पर दि.जैन महासमिति की चेलना इकाई, ललितपुर द्वारा श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर नई बस्ती पर अनेकों कार्यक्रम संचालित किये गये । संगठन पदाधिकारियों ने विशेष रुचि दिखाकर इस वर्ष भी रक्तदान करने हेतु लोगों में जन जागृति का संदेश दिया । दोपहर में महावीर नेत्र चिकित्सालय में जैन युवा संगठन द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया, जिसमें चेलना इकाई की अध्यक्षा श्रीमति मन्जू जैन, ममता, संगीता एवं श्रध्दा जैन ने रक्तदान करके मानवता का सन्देश दिया तथा सेवा भाव का संकल्प लिया ।

जूली जैन, बुढ़ार । बुढ़ार की समाजसेवी महिला श्रीमती जूली जैन द्वारा त्रिशला महिला मंडल, जैन युवा मंडल व जैन समाज के संयुक्त तत्वावधान में जिला ब्लड बैंक, शहडोल के लिये 18 अप्रैल को सिंधी धर्मशाला, बुढ़ार के हॉल में रक्तदान शिविर का आयोजन संपन्न हुआ। जिसमें समाज के अनेक श्रावक श्राविकाओं व गणमान्य नागरिकों ने कुल 34 यूनिट रक्तदान किया । रक्तदाताओं के उत्साहवर्धन के लिए जैन समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ सिंधी समाज बुढ़ार के श्री दातूमल विश्नदासानी 'बल्लू भाई' व अग्रवाल समाज बुढ़ार अमलाई के श्री श्यामसुंदर बगड़िया 'रक्तप्रहरी' पूरे दिन उपस्थित रहे। सभी रक्तदाताओं को जिला ब्लड बैंक की ओर से प्रमाण पत्र व समाज की ओर से शीतल पेय जल व फल दिया गया ।

शैलेष जैन 'पिन्टू' ललितपुर । देवगढ़ (ललितपुर, उ.प्र.) स्थित जैन तीर्थस्थल पर उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी ने जैन तीर्थंकरो व भगवान शांतिनाथ मंदिर जी के दर्शन किये व इस स्थल को पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करने का भरोसा दिलाया । देवगढ़ किले में 31 जैन मन्दिर है । यह जगह बेतवा नदी के तट पर स्थित है । 8वीं और 9वीं सदी में इनका निर्माण हुआ था । सबसे सुन्दर मन्दिर जैन तीर्थंकर शांतिनाथ का है । यहाँ गुप्त, गुर्जर, प्रतिहार, गोंड, मुगल, चन्देल और मराठों के वंश के कई ऐतिहासिक स्मारक और किले आज भी मौजूद । गत कई वर्षों से गोलालारीय परिषद के अध्यक्ष सेठ श्री चंपालालजी नौहरकलांवाले ने क्षेत्र अध्यक्ष के रुप में क्षेत्र का काफी विकास किया है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर

स्यादवादो वर्त्तते यस्मिन पक्षपातो न विद्यते। नास्तन्म पीड़नं किंचते, जैन धर्मः स उच्चते।।

अर्थात जिसमें स्यादवाद वाणी का अस्तित्व हो, किसी के प्रति पक्षपात न हो, साथ ही किसी को पीड़ा न पहुँचाने की बात हो, वह जैन धर्म है।

भगवान महावीर जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर थे। उनका आविर्भाव लगभग 2600 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन कुंडलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ के घर में हुआ। सभी प्रकार का राजसी वैभव उन्हें उपलब्ध था पर उनका मन उसके सुखोपभोग में नही लगा। भगवान महावीर के आगमन से पूर्व अज्ञानवाद, अनिश्चितवाद, नियतिवाद, भौतिकवाद, अक्रियावाद, यज्ञवाद एवं क्रियाकांडवाद आदि ने समाज में निराशा उत्पन्न कर दी थी। संसार में व्याप्त तृष्णा, अनीति और हिंसा में झुलसते समाज के लिये ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अनेकांतमयी दृष्टि के आलोक में लोगों के हृदय से अंधकार को दूर कर सके। महावीर ने लोकजीवन में व्याप्त बुराइयों का अध्ययन किया। महावीर ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे जिसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। मानव मात्र समाज हो और सभी को जीने का अधिकार हो अल्पायु 8 वर्ष की अवस्था में उन्होने कई नियमों को धारण किया था - (1) जीवों पर दया करना (अहिंसा वृत्ति) (2) सत्यवादिता (3) अचौर्यवृत्ति (4) ब्रह्मचर्य एवं (5) इच्छाओं को सीमित करना आदि। सबके मूल में है आत्म विजय। भगवान महावीर ने आस्था की स्वाभाविकता (उसके अनंत गुणादि की अभिव्यक्ति) आत्मविश्वास, आत्मज्ञान एवं आत्मसंयम को पूर्ण रुप से स्वयं प्राप्त कर लिया तब दूसरो को उस मार्ग पर चलने को कहा। भगवान महावीर इस धरती पर ज्ञान का अमृत स्त्रोत बहाने आये थे। उन्होने 30 वर्षो तक निरंतर विहार कर धरती के क्लेशों को दूर किया। उस समय उनके द्वारा किये गये अनेक कार्य है जैसे-

महावीर ने जाति का भेद मिटा कर प्रत्येक व्यक्ति के लिये कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनका कहना था कि श्रेष्ठता का आधार जन्म नही बल्कि कर्मगुण है

"कम्मुणा वइस्सो होई कम्मुणा होई खत्तिओ। कम्मुणा वइस्सो होई सुददो होई कम्मुनणा।।

अर्थात व्यक्ति कर्मों से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्रहोता है। अर्थात इस कर्म के कारण ही व्यक्ति को अच्छी गति सुख-दुख प्राप्त होते है। मैक्समूलर के अनुसार यदि किसी मनुष्य को यह मालूम पड़े कि मुझको जो कुछ भोगना पड़ता है वह मेरे पूर्व जन्मकृत कर्मों का ही फल है तो वह पुराने कर्ज को चुकाने वाले मनुष्य की तरह सहज व शान्त भाव से कष्ट सहन कर लेगा और भविष्य को सुधारने का प्रयत्न करेगा।

(2) भगवान महावीर ने इहलौकिक और पारलौकिक सुख के लिये होने वाले यज्ञादि कर्मकांडो की अपेक्षा संयम तथा तपस्या के मार्ग को प्रमुखता दी। महावीर की संपूर्ण जीवन दृष्टि अहिंसा, संयम और तप में आ जाती है। जैसे अहिंसा आत्मा है संयम श्वास है और तप उसका शरीर है और इन तीनों का योग ही महावीर है।

(3) भगवान महावीर ने पुरुषों की तरह स्त्रियों के जीवन विकास के लिये भी पूर्ण स्वतंत्रता दी और विद्या तथा आचार दोनों में स्त्रियों की भी पूर्ण श्रेष्ठ योग्यता को स्वीकार किया है।

(4) महावीर का अनेकांतवाद सिद्धांत वैचारिक उदारता के विभिन्न आयाम उपस्थित करता है। महावीर ने किसी वस्तु को एक ही दृष्टिकोण से देखना एकांगी समझा था। उन्होने 'ही' की अपेक्षा 'भी' पर जोर दिया। आज विभिन्न वर्गों, जाति, समाज में जो कलह, संघर्ष दिखता है उसका वैयक्तिक कारण दुराग्रह ही है। अनेकांतवाद इन सब में सुसमन्वय स्थापित करता है।

(5) जैन धर्म में पर्यावरण के संरक्षण के लिये भी निर्देश उपलब्ध है। आज हम प्रकृति विजय के नाम पर प्राकृतिक साधनों का असीम दोहन कर रहे है अर्थात बड़ी मात्रा में भू-खनन, जल अवशोषण, वायु प्रदूषण, हम वनों को काटना आदि कर प्रकृति के साथ अन्याय कर रहे है। जैन धर्म का संदेश है कि हम प्रकृति एवं प्राणियो का नाश करके नही अपितु उनका सहयोगी बनकर जीवन जीना सीखे उनके संहारक बनकर नही क्योंकि उनका संहार प्रकारांतर से अपना ही संहार है। इन कारणों से आज जीवन अधिकाधिक अप्राकृतिक और असहज होता जा रहा हैं। प्रदूषण न केवल पर्यावरण में, पर विचारो के सूक्ष्म लोक में भी पहुँच चुका है। परिणामस्वरुप आत्महत्या जैसी घटनाएँ बढ़ रही है।

(6) आज विश्व में आणविक और रासायनिक शस्त्रो की भी वृद्धि हो रही है। यह अंधी दौड़ सर्वविनाशक होगी। इस बात को भगवान महावीर ने पहले ही समझ लिया था।

आचारांग मे उन्होने कहा- **"अत्थि सत्य परेण पर- नत्थि असत्य परेणपरं"**

अर्थात शस्त्रों में एक से बढ़कर एक शस्त्र हो सकते है किन्तु अशस्त्र (अहिंसा) से बढ़कर कुछ नही है। आज सारा विश्व हिंसा, तनाव एवं आंतकवाद से ग्रस्त है भले ही आज मानव ने धरती से आकाश की ओर कदम बढ़ा लिये है पर कितना संत्रस्त कुंढित और विश्रृंखलित है आज का मानव ?

पर को त्याग कर स्वकेन्द्रित हो जाना। योग का परित्याग कर भोगावलंबन कर लेना। अंतर को उपेक्षित कर बाह्योन्मुखी ही रहना। आदर्श को छोड़ यथार्थ को ही जीवन का चरम मान लेना।

वर्तमान में सब समस्याओं की मूलभूत समस्या है धर्म और नैतिकता रुपी 'रज्जू' की टूटन। मनुष्य के देवत्व अंश (सद्प्रवृत्तियों) का विनाश और आसुरी अंश (असदप्रवृत्तियों) का प्रादुर्भाव। ऐसे समय में महापुरुषों के सिद्धांत सम्यक दिशा निर्देश करते है। सार रुप में कह सकते है कि वर्तमान में भगवान महावीर के सिद्धांत "अहिंसा परमोधर्म", "परस्परोपग्रहो जीवानाम्", "जियो और जीनो दो", भित्री में सव्व भुएसु (संसार के सब प्राणी मेरे मित्र है" - विशुद्ध नैतिक धर्ममय जीवन के लिये और समस्त विभिषिकाओं से बचने के लिये सार्थक है। भगवान महावीर की देन अनेकांतवाद वैचारिक संघर्ष से बचाता है, इसी तरह अहिंसा सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह से भी कई समस्याओं का समाधान होगा अर्थात वसुधैव कुटुंबकम, मैत्री, दया, क्षमा की भावना का प्रसार अनीति अत्याचार, रिश्वत खोरी से दूर रहने की कोशिश, परिग्रह परिमाण करना, इच्छाओं पर नियंत्रण आदि। उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों की इस वैज्ञानिक युग में आज उपादेयता ही नहीं, आवश्यकता भी है। आज के पदार्थवादी युग और तनावग्रस्त जीवन में मानव यदि सुख से जीना चाहता है तो जरुरी है महावीर की वाणी, उनका दर्शन हमारा पाथेय हो और जीवन का हर पल महावीर की उद्भावना से संयोजित संवर्द्धित रहे। किसी ने कहा है -

मरुस्थल को आग की नही, पानी की जरुरत है, संसार को कंजूस की नही, कर्ण दानी की जरुरत है, भूले भटके विश्व को फिर से नई राह मिलें, सचमुच आज महावीर जैसे ज्ञानी की जरुरत है।

- सुश्री डॉ. प्रतिभा जैन, इन्दौर

वर्तमान का चिंतन

वर्तमान समय की विषम परिस्थितियों के कारण समाजजनों के साथ एक चिंतन में भागीदारी चाहता हूँ कि कोई देश व समाज तभी अच्छा बनता है जब वहाँ के लोग अच्छे हो, भारत में आज हमारी आबादी बहुत कम होती जा रही है, जिससे देश में हिंसा, अनीति, अराजकता आदि बुराईयां बढ़ रही है। यह कैसी विडंबना है जिस देश में हम कभी बहुसंख्यक थे आज उसी में हम अल्पसंख्यक हो गये है। यदि हम आज भी नही संभलेगे तो आगे की स्थिति बहुत ही गंभीर होने वाली है। इस देश में जैनों से द्वेष रखने वाले बहुत है जो किसी न किसी तरह से हमारे साधुओं पर, उनकी निर्दोष चर्या पर एवं हमारे रीति रिवाजो पर कुठाराघात करने से नही चूकते। हमारी पुरातन ऐतिहासिक धरोहरों को, मंदिरों, मूर्तियों एवं धर्मशालाओं को तोड़ने का, हड़पने का एवं हमें राजनैतिक, विधिक, सामाजिक व आर्थिक नुकसान पहँचाने का प्रयत्न करते है। वे लोग इस प्रयत्न में काफी हद तक सफल भी हो जाते है क्योंकि हम संख्या में कम है, इतिहास गवाह है कि पुरातन काल से आज तक हमारे कितने युवाओं को डरा धमका कर या लालच देकर अन्य धर्म स्वीकार करने को विवश करते रहे है, जो न माने उन्हें मार दिया गया। आज हम देखते है कि हमारे कितने ऐसे मंदिर एवं मूर्तियां है, जो वीतरागी स्वरुप में थी उन्हें आज देवी देवता या अन्य सम्प्रदाय के मंदिर, मस्जिद या चर्च के स्थानों में पूजा जा रहा है। ये हमारी सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर थी, जो अब हमारे अधिकार में नहीं है। कारण हमारा राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभाव कम है, इसलिये सरकार भी हमारी बात नहीं सुनती है। क्योंकि देश में जहां एक तरफ वोट बैंक की राजनीति हो रही है हम उस जगह पर एकजुट नहीं है। देश में हमारा प्रभाव कम होने का सबसे बड़ा कारण हमारा अहं ही है क्योंकि हम इसी अहं के कारण एक नहीं हो पा रहे हैं। कभी हम रीति रिवाज, कभी पूजा पद्धति, कभी नये भेद के कारण आपस में विरोधाभास रखते है जबकि महावीर का मार्ग तो अनेकांत है जहाँ विवाद की कोई जगह ही नही है। महावीर के शासन में तो परस्पर विरोध रखने वाले पशु गाय और सिंह, सर्प एवं नेवला भी आपस में बैर भूलकर एक घाट पर पानी पीते थे फिर तो हम इंसान है। क्या हमे आपस में लड़ना शोभा देता है ? यदि हम अभी नही सुधरे तो भविष्य में हमारा मार्ग अनेक कंटकों अवरोधों से भरा हुआ होगा। इसलिये हमें आवश्यकता है कि हम एकता के सूत्र में बंधकर फूलों की माला की तरह रहे जिस तरह माला में कई रंग के एवं सुगंध के फूल एकसूत्र में बंधकर सुंदरता से शोभित होते है उसी तरह क्या हम भी देश में अपनी एकता से सुशोभित नहीं हो सकते है ? हमारा राजनैतिक, विधिक प्रभाव तो बढेगा ही साथ ही देश में जैनत्व का मान सम्मान भी बढ़ेगा। आज हमारी महती आवश्यकता है अपनी आबादी बढाने के साथ हम अपना नैतिक, बौद्धिक एवं आर्थिक स्तर ऊंचा उठायें तथा अपने साधर्मी भाईयों को वात्सल्य के साथ समाज एवं देश में आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं साधन उपलब्ध कराये, जिससे भगवान महावीर का शासन युगों युगों तक जयवंत हो, जयवंत हो वीतरागी श्रमण संस्कृति। भगवान महावीर स्वामी की जय।

- अभिषेक राजेश जैन 'अभि', पन्ना

पृष्ठ 1 का शेष... पाषाण से परमात्मा....

राज भोगना, पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी को अंकगणित और शिल्प कला सिखाना, तत्पश्चात पुत्रियों द्वारा आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करना (जिसका मंचन आचार्य श्री की प्रेरणा से स्थापित प्रतिमा, प्रतिभा की 16 बहनों ने किया, जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद इस पद को अपनाया है तथा स्वयं साधना करते हुये प्रतिमा–प्रतिभा में अपनी सेवायें दे रही है) नीलाजंना का नृत्य देखकर संसार की असारसता को समझकर राजा अदिनाथ को वैराग्य उत्पन्न हुया और उन्होंने दीक्षा ग्रहण की । लोकतांत्रिक देवों का स्वर्ग से आकर उनके वैराग्य भाव की प्रशंसा करना तत्पश्चात देवों व मनुष्यों में पालकी उठाने के सवाल को लेकर गुरुवर के पास समाधान पाना आदि का मंचन किया गया । अगले दिन मुनिश्री ऋषभसागरजी प्रथम आहार को निकले । 6 माह पश्चात राजा श्रेयांश ने उन्हें प्रथम आहार कराकर अपने जीवन को धन्य किया । राजा श्रेयांश बनने का सौभाग्य गोपाल नगर निवासी श्री अनिल प्रतिभा बॉकल को प्राप्त हुआ । शाम को भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई । अदभुत समवशरण का दृश्य दिखाया गया, जिसे देख उपस्थित श्रद्धालुगण भाव विभोर हो मानो समवशरण में ही पहुँच गये । 23 अप्रैल की भोर के समय 6.08 मिनट पर भगवान के मोक्ष का दृश्य अत्यंत ही भाव विभोर कर देने वाला था मंच पर बहुत ही सुंदर कैलाश पर्वत की रचना की गयी थी । तत्पश्चात हवनादि फिर समापन जुलूस यानि गजरथ फेरी में तपती सड़क पर अनुशासित मुनि, आर्यिका संघ व तीर्थंकर भगवान का सानिध्य एवं श्रद्धालुजनों ने हजारों इन्द्र–इन्द्राणियों के साथ सात फेरी पूर्ण की । जयकारों से सारा माहौल तपती धूप के बावजूद भी खुशनुमा बना रहा व इस तरह एक भव्य पंचकल्याणक साआनंद सम्पन्न हुआ । पंचकल्याणक में न केवल उदय नगर अपितु विजय नगर से भी कई प्रतिमाएं प्रतिष्ठित कराने के लिये यहां लायी गई ।

इस पंचकल्याणक में मुनि संघ तथा बा. ब्र. विनय भैयाजी ने जन साधारण को अनुशासन मे रखकर क्रिया करना ही नहीं अपितु उनका पूर्णतः शुद्धि और भावों के साथ कैसे करना ये सिखाया । बुन्देलखण्ड व इन्दौर में युवा मण्डलो द्वारा तन–मन–धन से पूर्ण सहयोग दिया । गोलालारीय समाज के सदस्यों ने सौंपी गयी जिम्मेदारियों का पूर्ण मनोयोग से निर्वाह किया ।महावीर जयंती के अवसर पर समाज मंदिर 64, न्यू देवास रोड़ से भव्य शोभायात्रा हर्षोल्लासपूर्वक निकाली गयी जिसमें क्षेत्र के साधर्मी बंधुओं ने बढ़ चढ़कर भागीदारी निभायी । इन्दौर नगर की मुख्य शोभायात्रा दोप. 3 बजे कांच मंदिर से प्रारंभ हुयी जिसमें नगर के अनेकों मंदिर व सोशल ग्रुप के साथ जैन समाज के विभिन्न संगठनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । यह शोभायात्रा मुख्य मार्गों से होती हुयी पुन: कांच मंदिर पर पहुंची, जहां कलशाभिषेक पश्चात कार्यक्रम संपन्न हुआ । गोलालारीय समाज ने गतवर्ष की तरह इस वर्ष भी शाकाहार के संदेशों के पोस्टर के साथ जुलूस में भाग लिया, जिसे मार्ग में खड़े हुए श्रद्धालुजनों ने काफी सराहा ।

पृष्ठ 1 का शेष... 1008 सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ....

तक आई । भव्य शोभा यात्रा ने नगर के मुख्य मार्गों पर परिभ्रमण किया । कार्यक्रम में शहर के प्रथम जैन मेयर श्री गौतमभाई शाह, श्री कौशिकभाई जैन, श्री सौभाग्यमल कटारिया व श्री जिनेन्द्र कुमार सेतुलाल जैन आदि महानुभाव शोभायात्रा में पधारे । भगवान की भव्य शोभा यात्रा पर ड्रोन हेलीकॉप्टर से पुष्पवृष्टि कर यात्रा को और भी रोचक बनाया गया । नगर के इतिहास में कार्यक्रम स्थल पर पहली बार दो–दो पांडुकशिला बनाई गई । एक पर पार्श्वनाथ भगवान जिनका जन्मकल्याणक मनाया जा रहा था उनका कलशाभिषेक किया और दूसरी पांडुकशिला पर महावीर स्वामी जिनकी जन्मजयंती का भव्य अभिषेक 5000 से भी ज्यादा श्रावकों के द्वारा किया गया । शाम को भगवान का भव्य पलना महोत्सव किया गया, जिसमे हजारो की संख्या में समाज ने धर्मलाभ लिया । पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सौधर्म इंद्र श्री महेंद्र कुमार हुकुमचन्द जैन तथा धनपति कुबेर श्री शैलेषकुमार फूलचंद फणीश एवं समाज के कई वरिष्ठजनों ने इन्द्र इन्द्राणी के रुप में धर्मलाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री शैलेषकुमार फूलचंद फणीश ने की व कार्याध्यक्ष श्री श्यामलाल भंवरलाल एवं श्री राजेन्द्र कुमार स्वरुपचन्द महामंत्री श्री अशोक कुमार फतेहलाल, सहमंत्री श्री महावीर फूलचंद, प्रदीप प्रेमचंद, सत्येंद्र कुमार प्रकाशचन्द्र आदि ने पूर्ण मनोयोग से कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया ।

महोबा में पंचकल्याणक महोत्सव साआनंद संपन्न ।

दर्शन जैन, ब्रजपुर । महेबा, पन्ना में आचार्य श्री वासुपूज्य सागरजी महाराज के सानिध्य में चल रहे पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव में 19 अप्रैल को भगवान चंदाप्रभु स्वामी का मोक्ष कल्याणक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया, जिसे देखने के लिए आसपास के कई नगरों के श्रद्धालुजन आये । पंचकल्याणक में उपस्थित समाजजनों ने महावीर जयंती की भव्य शोभायात्रा में आनंदपूर्वक भाग लिया । महावीर जयंती पर गुनोर से महेबा तक विशाल वाहन रैली निकाली गयी, पंचकल्याणक स्थल से जैन मंदिर तक महावीर भगवान का जुलूस निकाला गया । शाम को ब्र. प्रीति दीदी और गुंजा दीदी की आर्यिका दीक्षा समारोह का आयोजन किया हुआ, सभी लोगो के चेहरे पर हँसी और दुख दोनो देखने को मिला एक तरफ दीक्षा की वजह से खुशी और दूसरी तरफ हमारा सानिध्य छोड़े जाने का दुख भी था। पंचकल्याणक के अंतिम दिन गजरथ को पूरे नगर मे घूमाया गया । जिसमें प्रदेश के कई क्षेत्रों से श्रद्धालुयों ने उपस्थित होकर धर्मलाभ अर्जित किया ।

विशेष : **● वर्ष 2015 की मेडिकल एवं इंजीनियरिंग व अन्य प्रवेश परीक्षा में उच्च रैंक प्राप्त करने वाले बच्चे अपने जानकारी फोटो सहित भेजे।**

● कक्षा 1 से 5 तक 90 % या ए2 ग्रेड ● कक्षा 6 से 8 तक 80 % या बी1 ग्रेड ● कक्षा 8 से स्नातकोत्तर या प्रोफेशनल कोर्सेस में 70 % / बी2 ग्रेड या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उक्त प्रारुप, अंक सूची की फोटोकॉपी के साथ **15 जून 16** तक निम्न पते पर भेंजे ताकि आगामी अंक में उन्हे उचित स्थान दिया जा सकें। प्राप्त अंक सूचीयों को वरीयतानुसार प्रकाशित करा जावेगा। उक्त प्रारुप की फोटो कॉपी भी कराई जा सकती है। **विशेष नोट** – अंक सूची पर पूर्णांक/प्राप्तांक /प्रतिशत/ओवर आल ग्रेड (फायनल ग्रेड) स्पष्ट रुप से लिखना अनिवार्य है। ● अंक सूची पर काट पीट या ओवरराइटिंग न करें। उक्त प्रारुप को पूर्ण रुप से स्पष्ट भरा होने पर ही प्रविष्टी मान्य होगी। ● वर्ष 2015–16 की अंकसूची ही स्वीकार होगी। स्नातक/ स्नाकोत्तर/ प्रोफेशनल कोर्सेस पूर्ण होने पर ही उसकी मार्कशीट की फोटोकॉपी भेंजे। ● अंकसूची की संपूर्ण फोटोकॉपी भेजे जिसमें ग्रेड निर्धारण का विवरण अनिवार्य रुप से होना चाहिए। **● अपूर्ण जानकारी, अंकसूची नहीं होने पर, आवेदन फार्म नहीं होने पर फार्म को निरस्त कर दिया जायेगा।**

फार्म भेजने का पता : **''गोलालारीय दर्शन''**, श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 16, महारानी रोड़, एवं 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर –3

वर्ष 2015-16 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को सम्मानित करने हेतु आवेदन फार्म

वर्ष 2015–16 की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी निम्न प्रारुप में अपना विवरण 15 जून 2016 तक **गोलालारीय दर्शन** कार्यालय पर भेज सकते है।

विद्यार्थी का नाम: _____ कक्षा_____

पिता/माता का नाम : _____

डाक का पूर्ण पता : _____

नगर के पिन कोड फोन सहित देवें। _____

फोन/मोबाइल : _____

नवीन फोटो पर नाम व शहर का नाम लिखकर पिन लगाकर देवें

कुल अंक: _____ **प्राप्तांक**_____ **प्रतिशत/ग्रेड** _____

विशेष उपलब्धि: _____

नोट – कक्षा 10वीं और 12वीं के विद्यार्थी अंकसूची प्राप्त न होने की दशा में इंटरनेट से प्राप्त अंकसूची की फोटोकॉपी भी भेज सकते है ।

श्री 1008 भगवान महावीर जंयती महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न....

विदिशा - रविन्द्र जैन, विदिशा । नगर में प्रतिवर्षानुसार 1008 भगवान महावीर स्वामी की जन्म जंयती बड़े धूम-धाम से मनाई गई । जयंती की पूर्व बेला पर विभिन्न जिनालयों से प्रभात फेरी निकाली गई तत्पश्चात ध्वजारोहण का कार्यक्रम संपन्न हुआ । इस अवसर पर 105 श्री विभामति माताजी एवं 105 विनयश्री माता जी के सानिध्य में छोटा जैन मंदिर किले अंदर से एक विशाल चल समारोह निकाला गया जो नगर के मुख्य मार्ग बड़ा बाजार, तिलक चौक, किरी मोहल्ला जिनालय की परिक्रमा करते हुये माधवगंज चौराहे पर धर्मसभा में परिवर्तित हुआ ।

105 श्री विभामति माताजी के मुखारबिंद से भगवान महावीर स्वामी के पूर्व भवों का वाचन किया गया तत्पश्चात श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा कार्यक्रम संपन्न हुआ । उसके पश्चात चल समारोह पुनः जैन मंदिर, किले अंदर के लिये प्रस्थान हुआ । इस अवसर पर प्रातः सरकारी अस्पताल में दूध एवं फल का वितरण किया गया दोपहर में जरुरतमंद व्यक्तियों को वस्त्र प्रदान किये गये एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये जिसमें समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

इस अवसर पर श्री 1008 महावीर जिनालय किरी मोहल्ला (परमानंद जी) किरी मोहल्ला में पालना झुलाने का कार्यक्रम रखा गया एवं 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का हवन के साथ समापन भी हुआ । नगर के अन्य जिनालयों में भी महावीर जयंती बड़े हर्ष उल्लास से मनाई गई ।

पन्ना - अभिषेक जैन 'अभि', पन्ना । श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान के नाम से सुरभित रत्नगर्भा पन्ना नगर में वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक बहुत हर्ष, आनंद एवं उत्साह के साथ मनाया गया । नगर के दोनों मंदिरों को बहुत आकर्षक ढंग से सजाया गया । समाजजन भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याण मनाने हेतु बहुत उत्साहित थे । प्रात: 8 बजे बड़ा बाजार स्थित मंदिर से प्रभात फेरी निकाली गई जो शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुये बड़ा मंदिर धाम पर पहुँची, जहां से पुन: बड़ा बाजार मंदिर में जाकर समाप्त हुयी । दोपहर में भगवान महावीर स्वामी की भव्य एवं विशाल शोभायात्रा निकाली गयी, जिसमें समाज के सैकड़ों श्रद्धालुजन सम्मिलित हुए । श्री जी का जुलूस बड़ा मंदिर धाम से प्रारंभ होकर पन्ना नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ बड़ा बाजार स्थित मंदिर में पहुँचा, जहाँ भगवान महावीर स्वामी का 108 कलशो से अभिषेक एवं शांतिधारा की गई । बाद में श्री जी की शोभायात्रा वहां से विहार कर वापस बड़ा मंदिर धाम पर आकर साआनंद संपन्न हुयी। भगवान जिनेन्द्र की भव्य शोभायात्रा में जिनेन्द्र प्रभु का स्वागत करने के लिये जगह-जगह रंगोली एवं तोरण द्वार सजाये गये थे । सभी ने प्रभु की मंगल आरती कर असीम पुण्य की वृद्धि तथा धर्म की महती प्रभावना की । महिला मंडल द्वारा गरीब एवं बीमार लोगो का फल एवं भोजन का वितरण किया गया ।

भगवान महावीर का जीवन दर्शन समस्त प्राणिमात्र के लिये हितकारी है । उनके बताये पथ पर चल कर हम जीवन की समस्त विषमताओं एवं कष्टो पर विजय प्राप्त कर आनंद के पथ के पथिक हो सकते हैं ।

झाँसी - भगवान महावीर स्वामी का 2616 जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया इस अवसर पर विविध धार्मिक कार्यक्रमों का अयोजन किया गया । जिसमें श्रद्धालुओं ने बढ़ चढ़कर अपनी भक्ति का प्रदर्शन किया । इस अवसर पर जैन मन्दिरों से शोभा यात्रा, जुलूस आदि निकाले गये । सर्वप्रथम प्रातः प्रभातफेरी के माध्यम से शहर के मुख्य मार्गों से भगवान महावीर स्वामी का जयघोष, जयकारा लगाते हुये बच्चे, युवा, महिलाओं एवं बुजुर्गजन हाथो में अहिंसा परमो: धर्म के ध्वज लिये भगवान महावीर के जैन दर्शन का अलौकिक दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे । मुख्य शोभायात्रा शहर के मध्य स्थित दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर से निकाली गई, शोभायात्रा में श्रृद्धालु श्रीजी की प्रतिमा को विमान में लेकर चल रहे थे, युवा भक्त बैण्ड की भक्ति धुनो पर नृत्य करते हुये चल रहे थे, रास्ते में विभिन्न स्थानों पर स्वागत एवं जगह-जगह तोरण द्वार लगाये गये, शोभायात्रा तहसील स्थित गांधी भवन प्रांगण में पहुंची, जहाँ श्रृद्धालुओं ने भगवान की प्रतिमा का मंगल अभिषेक किया एवं भगवान का पालना झुलाया । इस मौके पर मुख्य अतिथि अपर महानिर्देशक पुलिस महेन्द्र मोदी एवं विशिष्ठ अतिथि श्री प्रदीप जैन 'आदित्य', पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने वयोवृद्ध सिंघई रामचन्द्र जैन, शेलेन्द्र जैन, सत्यवती जैन, राजीव जैन, गोकुलचन्द्र जैन एवं राजेश जैन, बीड़ी वाले, को जैन समाज गौरव पद से विभूषित किया गया । इस भीषण गर्मी में धर्मालम्बियों के लिये जैन मिलन, जैन सोशल ग्रुप एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ-साथ **भारत विकास परिषद्** बुन्देलखण्ड प्रान्त के प्रान्तीय अध्यक्ष राजेश जैन के निर्देशन में शीतल पेयजल एवं मीठा दूध वितरण किया गया । इस मौके पर आलोक गर्ग, देवेन्द्र सिंह, प्रभास खण्डेलवाल, आशुतोष मोदी, संजीव जैन, दीपक वार्ष्णेय, विवेक सोनी, शैलेन्द्र अग्रवाल, महेन्द्र जैन, अजय जैन, अभिताभ नगरिया, राशि जैन, सविता जैन, रंजना जैन, संगीता जैन, प्रियंका जैन, स्मिता जैन आदि उपस्थित रहे ।

दोपहर की बेला में तीर्थस्थली 'करगुंवा' के निकट करुणा स्थली पर भगवान महावीरजी की प्रतिमा का महामस्तिकाभिषेक क्षुल्लिका माता सरलमती माताजी द्वारा मांगलिक मंत्रोचारण के साथ सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर दीप प्रज्जवलित कैलाशचन्द जैन पत्रकार 'दैनिक विश्व परिवार' एवं ध्वजारोहण डॉ.पी.के. जैन ने किया । भगवान का अभिषेक बाहुबली जैन, दुष्यन्त जैन, प्रेमचन्द्र जैन एवं यश जैन ने किया, महामंत्री प्रदीप जैन 'दैनिक विश्व परिवार' ने सभी का आभार व्यक्त किया । रात्रि बेला में बड़ा मन्दिर जी में भगवान का पालना महोत्सव एवं विराट कवि सम्मेलन संपन्न हुआ ।

* **गुरुसंराय,** सकल जैन समाज द्वारा भगवान महावीर के जन्मकल्याणक दिवस के उपलक्ष्य में विशाल शोभायात्रा निकाली गई, शोभायात्रा में युवा अपार हर्षोल्लास के साथ अहिंसा के जयघोष लगाते हुये नाचते-गाते चल रहे थे । महिलायें केशरिया वस्त्र धारण किये हुये रथ के पीछे मंगलगान करते हुये चल रही थी । गोराई बाजार में स्थित पंचायती मन्दिर में भगवान को पाण्डुकशिला वर विराजमान कर अभिषेक साआनंद संपन्न हुआ ।

* **कटेरा,** स्थित जैन मन्दिर में भगवान महावीर की जयन्ती हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई भगवान महावीर की प्रतिमा को विमान में विराजमान कर नगर के मुख्य मार्गों से होते हुये वापस जैन मन्दिर में अभिषेक के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें समाजजनों ने बढ़ चढ़कर अपनी भूमिका निर्वाह की ।

* **मऊरानीपुर,** महावीर जयन्ती के अवसर पर नगर में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई दुबे के चौक से शोभायात्रा निकाली गई इस दौरान लोगों ने अनेक स्थानों पर पुष्पवर्षा एवं श्रीजी की आरती उतारी तत्पश्चात मन्दिर प्रागंण में ढोल नगाड़ो के साथ भगवान का अभिषेक साआनंद सम्पन्न किया ।

भोपाल - प्रदीपकुमार जैन । नगर में महावीर जयन्ती बड़े ही हर्षोल्लास से मनाई गई, सभी मंदिर में अभिषेक शान्तिधारा हुई। सतत् 4 वर्षो से नेहरु नगर, पंचशील टीनशेड मंदिर जूलूस के रुप में भोपाल की हृदय स्थली कीर्तिस्तंभ रोशनपुरा पर एकत्रित होते रहे है तथा टीनशेड मंदिरजी से शोभायात्रा में श्री जी को ले जाकर कीर्तिस्तम्भ पर सामूहिक अभिषेक, शान्तिधारा होती है । परम्परा अनुसार चौक मन्दिरजी से प.पू. उपाध्याय निर्भय सागर जी महाराज संसघ के सानिध्य में ऐतिहासिक चल समारोह जिसमें श्वेताम्बर तारणपंथी भी शामिल रहते है, महिलायें केसरिया साड़ी एवं पुरुष श्वेत वस्त्र पहनकर सम्मिलित हुये । विभिन्न स्थानों पर स्वागत किया गया शाम को मन्दिरों में आरती का आयोजन हुआ । महावीर जयंती के दो दिन पूर्व चौक मंदिरजी से दोपहिया वाहन रैली नगर के कई मंदिरों से होती हुई प्रातः 10 बजे बड़ी झील स्थित वर्धमान पार्क पहुँची । इस खूबसूरत पार्क में दि. जैन महासभा द्वारा भगवान महावीर के संदेश 'परस्परो ग्रहो जीवानाम' का अभिलेख सुन्दर लाल पत्थर से निर्माण कराया गया जिसे म.प्र. के गृहमंत्री श्री बाबूलालजी गौर द्वारा समाज को समर्पित किया । वर्धमान पार्क की खुबसूरती अब पहले से अधिक हो गई वर्धमान पार्क में सनराइज एवं सनसेट देखना आकर्षण का केन्द्र है जो बिरली ही जगह देखने को मिलता है । महावीर जयन्ति के अवसर पर विगत चार वर्षों से जैन कवि सम्मलेन का आयोजन होता रहा है, खचाखच भरे वर्धमान पार्क में देर रात तक समाजजनों ने मंत्रमुग्ध होकर कवि सम्मेलन का आनंद लिया । समाज के गौरव श्री पवन जैन ए.डी.जी के निर्देशन में सानन्द सम्पन हुआ कवि सम्मेलन आयोजन के अध्यक्ष डा.पी के. जैन नेहरु नगर एवं अन्य सहयोगी श्री राकेश जैन'अनुपन', प्रदीप जैन 'एलआयसी', श्री राजेश मारिल्य नेहरु नगर ,श्री प्रदीप जैन नौहरकलां आदि अनेक सहयोगियों के माध्यम से संपन्न हुआ जिसमें देश के जाने माने कवियो ने अपनी-अपनी कविता पाठ किया ।

मुंबई –संजय जैन, कल्याण, मुंबई । कल्याण दिगम्बर जैन समाज द्वारा भगवान महावीर स्वामी का जन्मकल्याणक महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया । श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, में भगवान महावीर स्वामी की अभिषेक के साथ सामूहिक पूजा हुई, जिससे मंदिर का वातावरण भक्तिमय हो गया । समाज के सभी लोगो ने पूर्ण मनोयोग से बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक महोत्सव का पूरा कार्यक्रम ''कल्चर कमेटी श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंडल'' कल्याण के द्वारा आयोजित किया गया । कल्याण में पहली बार बैंड बाजों के साथ भव्य शोभा यात्रा निकली गई, जो कि शहर के मुख्य मार्ग से होती हुयी पुन: मंदिरजी पर आयी । मार्ग में श्रद्धालुओं ने भजनों के साथ गरबा खेला और जिनवर की भक्ति गीत गाते हुए और नाचते हुए शोभायात्रा में एक साथ चलकर भव्यता प्रदान की । चल समारोह का संचालन संजय जैन, श्री विपिन जैन, अरूण कुमार जैन एवं विवेक सिंघई के साथ ही सुनील जैन, अभय जैन जी कर रहे थे ।

कार्यक्रम की शुरूआत मंगलाचरण और णमोकार मंत्र से हुई जो कि सपना गंगवाल के साथ उपस्थित समाजजनों ने गाया तत्पश्चात मुख्य अतिथि श्री अनुराग जैन और विशेष अतिथि श्री इंद्रा कुमार जैन के साथ ट्रस्ट मंडल श्री विजय कुमार कासलीवाल, मंत्री श्री जयंत किलेदार तथा विपिन जैन, अभय जैन ने दीप प्रज्जवलित कर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरूआत की, सर्वप्रथम कु. जिया गंगवाल ने भगवान महावीर स्वामी पर अपने विचार प्रकट किये । फिरोजाबाद से पधारी श्रीमती इंदु जैन और उनकी बेटी कशिश जैन ने बहुत ही सुरीले भजन गाये । इसके बाद पाठशाला के बच्चों ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की जो कि श्रीमती श्वेता जैन के द्वारा लिखी गई थी । इसके बाद समाज के जो बच्चे मेरिट में आयें थे, उन्हें भी सांस्कृतिक समिति द्वारा अवार्ड के साथ एक प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया । कमेटी के सभी सदस्यों को उपस्थित अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया

मुख्यअतिथि श्री अनुराग जैन और श्री इंद्रकुमार जी जैन ने अपने उद्बोधन में धार्मिक बातें कही । समाज को एकजुटता दिखाने के लिए सदैव तत्पर रहने को कहा । अनुराग जैन ने सटीक शब्दों में धर्म के साथ-साथ बच्चों के भविष्य पर सबसे ज्यादा ध्यान रखने पर जोर दिया । आपने बहुत ही अच्छे सूत्रों के साथ अपना उद्बोधन को पूरा किया, जिसे समाज के हर व्यक्ति ने बहुत ही सराहा । कार्यक्रम का संचालन संजय जैन एवं आभार समाज मंत्री ने व्यक्त किया ।

जबलपुर – अरविंद जैन, जबलपुर । श्री दिगम्बर गोलालारीय जैन नवयुवक सभा के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति वृद्धाश्रम एवं कुष्ठाश्रम जाकर भगवान महावीर स्वामी 2616 वीं जयंती के उपलक्ष्य में श्री राजकुमार जैन द्वारा भगवान महावीर स्वामी के सत्य, अहिंसा, जियो और जीने दो के नारे लगाते हुये संदेशों का वाचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्था अध्यक्ष अरविंद जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जयकुमार जैन, डॉ. सुनील जैन, अश्विन जैन, आलोक जैन, प्रीती जैन, श्वेता ऋषभ मोदी, सविता, रीतेश मोदी, श्रीमती अनुराधा जैन, श्रीमती सपना जैन, श्रीमती ज्योति जैन, श्रीमती रीना जैन का विशेष सहयोग रहा। एक दिन पूर्ण श्रीगणेश प्रसाद वर्णी पाठशाला के बच्चों द्वारा भव्य नृत्य-नाटिका, भगवान आदिनाथ के द्वारा बताये गये षठकर्मों का नृत्य नाटिका के माध्यम से वर्णन किया गया । महावीर जयंती के जुलूस में शामिल होने चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर संगम कालोनी से पालकी निकाली गई, मार्ग में पूजन, आरती एवं जुलूस का स्वागत किया गया, सकल जैन समाज की शोभायात्रा हनुमानताल बड़े जैन मंदिर से प्रारंभ होकर शहर के मुख्य मार्गो से होती हुयी कमानिया गेट आयी। यहां से अन्य झांकियाँ एवं पालकियाँ शोभायात्रा में सम्मिलित हुई । जुलूस में शहर के 15 मंदिरों की झांकियाँ एवं रजत पालकी, 4 श्री जी के रथ, 10 बग्घी, 20 बैण्ड पार्टी, 5 धमाल पार्टी, 25 घोड़े एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन सम्मिलित हुए। शोभायात्रा का जुलूस विभिन्न मार्गों से होता हुआ पुन: कमानिया गेट पर आया, जहां महाशांतिधारा हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुयी । शोभायात्रा में माननीय सांसद, विधायक, महापौर एवं पार्षदगण सम्मिलित हुये।

तालबेहट – विशाल जैन पवा, तालबेहट। भगवान महावीर स्वामीजी ने हमें जैन धर्म के पांच महा सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का संदेश दिया, लेकिन आज लोगों ने अहिंसा के 'अ' को सत्य में जोड़कर अचौर्य का अब्रह्मचर्य में जोड़ दिया और अपरिग्रह के 'अ' को तिजोरी में डालकर पांच हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह में लिप्त हो गये। यह उद्गार 24 में तीर्थकर वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी के 2015 वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर आचार्य विद्यासागर जी महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका रत्न 105 पूर्णमति माताजी ने पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में व्यक्त किये। इस अवसर पर सुबह प्रभात फेरी, अभिषेक पूजन के उपरांत श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। विमानोत्सव के कार्यक्रम में सबसे आगे तैलीय चित्रों की झांकी, डी.जे. बैण्ड की धार्मिक धुनों पर नृत्य करते युवा, आर्यिका संघ, श्रीजी को विमान में लेकर श्रद्धालु, सत्य-अहिंसा जियो और जीने दो के नारे लगाते हुए धर्मावलंबी एवं बग्गी में सवार महाराजा सिद्धार्थ और महारानी त्रिशला बने श्रीमती नेहा चौधरी, महावीर जैन चल रहे थे। शोभायात्रा पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से प्रारम्भ हुयी एवं नगर भ्रमण के बाद वापस मंदिर जी पहुँची। ब्र. दीपक भैयाजी के निर्देशन में कलशाभिषेक-शान्तिधारा, फूलमाल का आयोजन किया गया। इस अवसर पर धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए माता जी ने कहा कि हमें बच्चों के जन्मदिवस पर पाश्चात्य की विकृतियों के वशीभूत होकर मोमबत्तियां नहीं बुझाना चाहिए, हमें तो ज्ञान की ज्योति जलाकर जन्मदिवस नहीं जिन दर्शन दिवस मनाना चाहिए। केक को काटकर चाकू से खिलाना-खाना हमारे देश की संस्कृति नहीं, भारतीय संस्कृति में तो दान देने की परम्परा है, आहार दान देने वाला कभी भूखा नहीं रहेगा, औषधि दान देने वाला कभी बीमार नहीं पड़ेगा, शास्त्र दान करने वाला कभी मंद बुद्धि नहीं होगा और जीवों को अभय दान देने वाला कभी भयभीत नहीं होगा, अकाल मौत नहीं मरेगा। आर्यिका माताजी ने कहा कि हमारे आचरण और विचार सुगंधित और सुन्दर फूल की तरह होना चाहिए, क्योंकि व्यक्तित्व से ही आदमी महान बनता है जिसमें मानवता और इंसानियत होती है। नेता वोट चाहता है, अमीर नोट चाहता है और महत्वाकांक्षी सपोर्ट चाहता है लेकिन महावीर स्वामी लोगों को इंसान बनाने के लिए उनसे खोट चाहते है । अत: कल्याणक महोत्सव के अवसर पर अपनी बुराईयों को छोड़कर चेतन्य स्वरुप आत्मा को प्रगट करने के लिए महावीर स्वामी के आदर्शो को अंगीकार कर इंसानियत को धारण करना चाहिए। सायं काल की बेला में गुरु भक्ति, मंगल आरती एवं भजन संध्या के बाद विद्यासागर पाठशाला के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, विराट प्रश्नमंच का आयोजन किया गया एवं भगवान महावीर स्वामी पर आधारित सुंदर नाटक की प्रस्तुति दी। 21 अप्रैल को आत्म बोध की कक्षा का शुभारम्भ किया गया, जिसमें डा. नरेन्द्र कुमार जैन, अक्षय टडैया ललितपुर ने आचार्य विद्यासागर जी महाराज के चित्र का अनावरण कर ज्ञानद्वीप प्रज्वलित किया, वीर सेवा दल ने मंगल कलश की स्थापना की एवं नव युवक मंडल ने आर्यिका माता जी को शास्त्र भेंट किया। इस अवसर पर आर्यिका पूर्णमति माताजी ने कहा कि चैतन्य स्वरुप आत्मा को प्रगट करने के लिए ज्ञान और दर्शन बहुत ही जरुरी है, जिससे चारित्र का निर्माण होता है। शिविर के पहले दिन णमोकार महामंत्र का महत्व, भावार्थ समझाया। कार्यक्रम में भारी संख्या में जैन श्रद्धालु उपस्थित रहे। संचालन पूर्व पार्षद चक्रेश जैन ने किया।

पूना – आशीष जैन, रोहित जैन, पूना । मुनिश्री नियमसागरजी महाराज की प्रेरणा से आज एक अदभुत घटना देखने को मिला जब 10 मुसलमान कारीगरों ने आजीवन मदिरा, मांस और मधु का त्याग किया । सच्चे अर्थों में महावीर भगवान के जन्म कल्याणक को मनाने का यही फलितार्थ हैं । ये कारीगर चिंचवड में बने मंदिर की वेदी आदि का निर्माण कर रहे है । निमित्त प्रबल हो तो उपादान में परिवर्तन अवश्य होता है ये आज हमने प्रत्यक्ष देखा है । हम इन मुस्लिम कारीगरों की त्याग की बहुत-बहुत अनुमोदना करते है । पुणे के चिंचवड क्षेत्र में मुनिश्री 108 नियमसागर जी महाराज, मुनिश्री 108 प्रबोधसागर जी महाराज, मुनिश्री 108ऋषभसागर जी महाराज, मुनिश्री 108 अभिनंदनसागर जी महाराज एवं मुनिश्री 108 सुपार्श्वसागर जी महाराज के सानिध्य में महावीर जन्म कल्याणक तिथि पूरे उत्साह के साथ मनाई गई । मुनिश्री नियमसागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में जैन समाज को प्रेरणा दी की पूरा समाज मिलकर हर मंदिर के बाहर शुद्ध शाकाहारी और अहिंसक खाद्य पदार्थों / बेकरी आयटम की दुकान को खोल कर उसका संचालन करे, जिससे जैन श्रावको को बाहर की दुकानों से अशुद्ध, मांसाहार से मिश्रित और हिंसक खाद्य पदार्थ / बेकरी आयटम खरीदना न पड़े और श्रावक अभक्ष्य खाद्य पदार्थों के सेवन से बचे । महाराज जी ने बताया की म.प्र. में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद और प्रेरणा से ऐसी दुकानें बहुत से मंदिरो के बाहर चल रही है । महाराज जी ने कहा कि यथार्थ में महावीर जन्म कल्याणक तिथि तब मनेगी जब हम भगवान महावीर स्वामी का 'जियो और जीने दो' का सन्देश चरितार्थ करेंगे । महाराज जी की प्रेरणा से चिंचवड में विगत कुछ वर्षों से श्रावक लोग गौ गुल्लक की योजना सफलतापूर्वक चला रहे हैं जिसमें गायों के संरक्षण व संवर्धन के लिये एक गुल्लक दी जाती है जिसमें श्रावक प्रतिदिन अपनी शक्ति अनुसार जीव दया के कार्य के लिये दान राशि डालते है और बाद में यह राशि गौशालाओं के संचालन के लिये एकत्रित कर भेज दी जाती है । प्रवचन के बाद पंच मुनिराज के सानिध्य में शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें श्रावको के नारे गुंजायमान हुए। घोड़े बग्गियाँ बैंड आदि से यह शोभा यात्रा अधिक भव्य बन गई थी ।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड द्वारा सम्मानित

डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर । '' मैंने कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ का गत फरवरी माह में दो बार अवलोकन किया यहां देश एवं प्रदेश के सदूरवर्ती अंचलो में स्थित व्यक्तिगत एवं संस्थागत पाण्डुलिपियों के संग्रहों के सूचीकरण एवं संरक्षण का जो अनुपम कार्य किया गया है वह प्रशंसनीय है। यहां पर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि के भंडारो में सम्मिलित 1,32,732 पाण्डुलिपियों का 7मार्च 2016 तक सूचीकरण किया जा चुका है। इससे इनमें निहित ज्ञान के माध्यम से शोध के नये क्षितिज खुलेंगे। इस हेतु ज्ञानपीठ के सभी प्रबंधकों विशेषतः डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल, अध्यक्ष एवं डॉ. अनुपम जैन, कार्यकारी निदेशक को बधाई देता हूँ । उक्त विचार गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के नेशनल हेड डॉ. मनीष विश्नोई ने कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के पाण्डुलिपि सूचीपत्रों के सबसे बड़े निजी संकलन हेतु प्रमाण पत्र के प्रस्तुतीकरण के अवसर पर व्यक्त किये ।

पं. जयसेन जैन, संपादक– सन्मतिवाणी के मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर डॉ. अनुपमा विकास जैन ने स्वागत उद्बोधन दिया एवं जो राष्ट्रीयन कॉलेज के इन्दौर प्रमुख डॉ. एम. के. ओझा एवं डॉ.मन्मथ पाटनी विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित रहे ।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा 1993 से अब तक किये गये कार्य और उपलब्धियों का विस्तृत परिचय संस्था सचिव डॉ. अनुपम जैन द्वारा दिया गया । उन्होनें बताया कि नेशनल इस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एवं राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, नई दिल्ली के साथ मिलकर नई दिल्ली में लगाई गई चित्रमय पाण्डुलिपि(31.03.2016 से 08.04.2016 तक) प्रदर्शनी में कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा भी 90 चित्रमय पाण्डुलिपियाँ प्रदर्शित की गयी है।

आभार प्रदर्शन करते हुए डॉ.अजितकुमारसिंह कासलीवाल ने कहा कि यह मेरे पूर्वजों द्वारा बोये गये बीज का सम्मान है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ मेरे पूज्य पिताजी श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल जी की दूरदृष्टि का प्रतिफल है। उन्होनें सभी समागतजनों विशेषतः डॉ. मनीष विश्नोई का आभार माना ।

नवागढ़जी के वार्षिक मेले में धार्मिक अनुष्ठानों की धूम ।

विशाल जैन, पवा । महरौनी (ललितपुर) प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़जी में षष्ठ पट्टाचार्य सरागोद्धारक संत आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद से वार्षिक मेला का आयोजन श्री 108 आचार्यश्री विद्याभूषण सन्मतिसागरजी महाराज की परम शिष्या क्षुल्लिका पूजाभूषण एवं भक्तिभूषण माताजी के पावन सानिध्य में हुआ। दो दिवसीय वार्षिक मेले के समापन पर श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी, जिसमें श्रीजी को विमान में लेकर इन्द्रगण धर्मध्वजा लेकर श्रद्धालु एवं सत्य, अहिंसा के नारे लगाते हुए दूर दराज और निकटवर्ती ग्रामों से पधारें धर्मावलम्बी चल रहे थे ।

विमानोत्सव के उपरांत कलशाभिषेक एवं निर्वाण लाडू चढ़ाकर 18वें तीर्थंकर भगवान अरनाथ स्वामी एवं 14वें तीर्थंकर भगवान अनंतनाथ स्वामी का मोक्ष कल्याणक मनाया गया। सुबह प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमारजी 'निशांत' भैया के निर्देशन में मूलनायक भगवान अतिशययुक्त 1008 श्री अरनाथ स्वामी का मस्तकाभिषेक पूजन के उपरांत पुष्पेन्द्र जैन एण्ड प्रिंस ककरवाहा के मधुर संगीत में आचार्य विभवसागरजी महाराज द्वारा रचित सर्वसिद्धि दायक अरनाथ महामंडल विधान का आयोजन किया गया । इस अवसर पर भैयाजी ने कहा कि आज का मानव बाहरी परिवेश में सुख शांति को खोज रहा है एवं उसका राग निरंतर बढ़ता ही जा रहा है जो दु:ख का कारण है । हम वित्त का राग त्याग कर रही वीतरागता को प्राप्त कर सकते हैं, जिसमें वित्त से तात्पर्य शरीर से संसार तक है ।

कार्यक्रम के शुभारंभ में ध्वजारोहण अभयकुमार रिंकू भदौरा टीकमगढ़ ने किया । शिखरों पर कलशारोहण बाबूलाल जैन टीकमगढ़, आनंदीलाल दुर्ग एवं रमेशचन्द्र बण्डा ने किया । मानस्तंभ के जिनबिम्बों का वार्षिक महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया एवं मंगल आरती के कार्यक्रम में श्रद्धालु प्रभु की भक्ति में झूम उठे । वार्षिक मेले के मुख्य कार्यक्रम दोपहर की बेला में संपन्न हुए, जिसमें क्षेत्र का वार्षिक अधिवेशन के उपरांत विमानोत्सव का आयोजन किया गया एवं निर्वाण लाडू चढ़ाकर अरनाथ स्वामी का मोक्षकल्याणक महोत्सव मनाया । इस अवसर पर क्षुल्लिका पूजाभूषण एवं भक्तिभूषण माताजी ने अपने मंगल प्रवचन में मोक्षमार्ग प्रशस्त करने के लिए तीर्थंकरों के निर्वाण महोत्सव के कार्यक्रम को अतिआवश्यक बताया । उन्होंने नावई के नंदपुर स्थित तीर्थक्षेत्र नवागढ़ के अतिशय का गुणगान करते हुए कहा कि जो सच्ची श्रद्धाभक्ति के इस पर आता है वह कभी खाली हाथ नहीं जाता । कार्यक्रम में नगर व आस पास के कई क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने भाग लिया व जैन युवा जागृति संघ ने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह बखूबी किया ।

भारतीय जैन मिलन का क्षेत्रीय अधिवेशन में खुले में शौच क्रिया को प्रतिबंधित में आंशिक छूट हेतु प्रस्ताव पारित कर ज्ञापन प्रेषित्र किया गया ।

अनिल जैन, गंज बासौदा । भारतीय जैन मिलन का क्षेत्रीय अधिवेशन में सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि दैनिक समाचार पत्र आचरण ग्वालियर म.प्र.27 मार्च 2016 प्रभूति देश के अधिकांश समाचार पत्रों में प्रमुखता से 'खुले' में शौच या गंदगी पर 5 हजार तक जुर्माना इस समाचार द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' को व्यापक रूप से अमल में लाने के लिए खुले में शौच, पेशाब या कचरा फेंकने पर 200 रूपये से लेकर 5000/– तक अर्थदण्ड वसूल किये जाने का निर्देश दिया गया हैं ।

जैन धर्म के आचार प्रधान ग्रंथों में विहित निर्देशों के अनुरूप दिगम्बर जैन परम्परा के साधक रूप आचार्य, उपाध्याय मुनि, आर्यिका, ऐलक क्षुल्लक, क्षुल्लिका, 9वीं श्रावक श्राविका, ब्रह्मचारी आदि अहिंसा व्रत के परिपालन हेतु खुले स्थान में सदा ही शौच क्रिया का परिचालन करते रहे हैं।

इस निर्देश के परिपालन किए /कराए जाने पर अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में स्वीकृत जैन समुदाय के साधकों आदि को खुले में शौच जाने की क्रिया पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं ।

इस संबंध में माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया गया कि दिगम्बर जैन धार्मिक ग्रंथो के निर्देशानुरूप अनुपालन करने वालों को इस प्रतिबंध से छूट दिलवाने हेतु उचित संशोधन निर्धारित कर निर्देशित कराया जावे, ज्ञापन में देहरादून, मुजफ्फरनगर, गंजबासौदा, बड़ौत, मेरठ, अशोकनगर, गुना, विदिशा, राधोगढ़, ईशागढ़, इन्दौर, आरोन, भोपाल के अनेकों वरिष्ठ सदस्यों ने सामूहिक हस्ताक्षर किये ।

सीकर जैन समाज का ऐतिहासिक संकल्प

अरुण जैन, कोटा । राजस्थान परम पूज्य 108 मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज एवं मुनि विराटसागरजी महाराज के ससंघ सानिध्य में सीकर जैन समाज ने ऐतिहासिक फैसला लिया, जिसके अंतर्गत अब वैवाहिक तथा सामाजिक कार्यक्रम की सभी मागंलिक क्रियाएँ तथा भोजन सूर्यास्त से पहले संपन्न होगे तथा वैवाहिक तथा सामाजिक कार्यक्रम में बनने वाले भोजन में आलू, प्याज, लहसुन, फुलगोभी तथा समस्त प्रकार के जमीकंद बंद रहेगे ।

मुनि प्रमाण सागर जी महाराज ने सोमवार को नया जैन मन्दिर में आयोजित धर्म सभा में समस्त सीकर जैन समाज के लोगों को इस सन्दर्भ में संकल्प दिलाया । उन्होंने कहा कि आज का दिन सीकर जैन समाज में जैनत्व की जीत के रुप में देखा जायेगा । संकल्प लेने वाली संस्थाओ में भगवान महावीर चेरिटी ट्रस्ट (जैन भवन), पार्श्वनाथ भवन, दीवान जी की धर्मशाला, देवीपुरा धर्मशाला, मोदियों की धर्मशाला, सेठी कालोनी, महावीर भवन आदि में अब रात्रि में वैवाहिक कार्यक्रम निकासी, वरमाला, फेरे एवं भोजन नही होगे । समस्त कार्यक्रम दिन में संपन्न होगे । जैन समाज सीकर की संस्थाएँ जैसे जैन सोश्यल जैन ग्रुप सीकर, जैन महिला मण्डल, जैन सोश्यल ग्रुप शेखावटी, जय जिनेन्द्र ग्रुप, अरिहन्त महिला मण्डल, जैन वीर संगठन, आचार्य विशुद्धसागर बाल मंडल, आचार्य ज्ञान सागर युवा मंच, पुलक जन चेतना मंच आदि संस्थाओं ने जैनत्व को बचाने की इस मुहिम में संकल्प लिया ।

नोट – गोलालारीय दर्शन पत्रिका के लिए सागर, बीना, बबीना, उज्जैन क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय प्रतिनिधि (महिलाये इच्छुक हो तो सादर आमंत्रित है) जो सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में रुचि रखते है वे सादर आमंत्रित है। वे 9406744064 पर संपर्क करे ।

आदर्शों को जीवन में उतारने में ही कल्याण –गणाचार्य 108 विरागसागर महाराज

शैलेश जैन 'पिन्टू', ललितपुर। देवाधिदेव भगवान महावीर स्वामी का जन्मोत्सव राष्टसंत गणाचार्य विरागसागर महाराज के ससंघ सानिध्य में जैन मंदिरों में प्रभावना पूर्वक मनाया गया। मुख्य आयोजन जैन अटामंदिर जी में हुआ जहां भगवान महावीर की पूजन के उपरान्त तीर्थकर बालक बर्द्धमान का पालना झूला एवं बालक्रीडायें हुई जिसमें भारी संख्या में धर्मालुजन सम्मिलित हुए।

इस मौके पर धर्मसभा में गणाचार्य महाराज ने कहा भगवान महावीर स्वामी मात्र जैनियों के नहीं अपितु समग्र विश्व के थे उन्होने सत्य की खोज कर प्राणी मात्र को सत्य क्या है? सत्य का मार्ग क्या है? यह जीवन में उतार कर बतलाया है। हर व्यक्ति जीने की कला के साथ जिए 'स्वयं भी जिओ और दूसरों को भी जीने दो' का सूत्र वर्तमान में आज भी आदर्श बना हुआ है। उन्होंने कहा भगवान महावीर की आदर्श चर्या का प्रभाव मात्र जैनों पर नहीं अपितु अन्य साधुओं पर भी पड़ा । भगवान महावीर ने दीन दुखियों की रक्षा करने की बात नहीं, वरन कहा कि अपनी आत्मा की तरह ही दूसरों की आत्मा है एक दूसरे के सुखदुख में सहभागी बनें। उन्होने कहा उनके आदर्शो को जीवन में उतारने की आवश्यकता है तभी भगवान महावीर स्वामी की जयंती मनाना सार्थक होगा। इसके पूर्व आर्यिका विशिष्ट श्री माता जी ने दीक्षा दिवस पर गणाचार्य महाराज से आशीर्वाद ग्रहण किया। भगवान महावीर स्वामी एवं गणाचार्य महाराज की संगीतमय पूजन आर्यिका विश्वास श्री माता जी ने भक्तिभाव से सम्पन्न कराई। जैन पंचायत के पूर्व अध्यक्ष सुन्दरलाल शीलचंद जैन अनौरा ने भगवान को प्रथम पालना झुलाकर पुर्ण्याजन किया। गणाचार्य महाराज का पादप्रक्षालन महेन्द्र जैन भोपाल ने किया गया। जबकि वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज एवं समाधि सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज के चित्र के सम्मुख दीपप्रज्जवलन समाज श्रेष्ठियों द्वारा हुआ। शाम को सावरकर चौक से भगवान महावीर स्वामी की भव्य शोभायात्रा परम्परागत मार्ग से निकाली गयी, जिसमें श्रद्धालुजन महावीर स्वामी की जय जयकार करते हुए चल रहे थे, साथ ही अश्वों पर सवार नवयुवक ध्वज पताकायें लिए हुए चल रहे थे। वीर सेवा संघ का धर्मचक्र, वीर व्यायामशाला नयामंदिर, बडामंदिर के स्वयंसेवक लेजम चाचर के माध्यम से प्रदर्शन कर रहे थे। जैन मिलन सिविल लाइन, मण्डल सेवा मण्डल, भाग्योदय रक्तदान समिति, दि. जैन महासमिति, श्रमणोपासक संघ, समाधिसागर सेवा संघ, विद्यासागर सेवा संघ, तारण तरण सेवा संघ, दयोदय पशु संरक्षण केन्द्र, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप मंच, चन्द्रप्रभु महिला मण्डल, जैन मिलन महिला, जैन अहिंसा के युवा संघ, विशुद्ध चेतना संघ, जैन युवा संगठन, जैन सेवा संघ, राष्ट्रीय बचत अभिकर्ता संघ, जैन एम्बुलेंस सेवा समिति के स्वयंसेवकों ने स्थान स्थान पर अपनी व्यवस्थाओं के माध्यम से अगुवाई की। दिगम्बर जैन परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष सुभाष जायसवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रदीप चौबे, हरीराम निरंजन ने संयुक्त रुप से दीपप्रज्जवलन किया।

गंज बासौदा में महावीर जंयती की धूम

शान्तिकुमार जैन, गंजबासौदा । जैन समाज के आराध्य भगवान महावीर स्वामी की जयंती नगर एवं आस-पास के क्षेत्रों में पूरे उत्साह एवं श्रद्धाभाव के साथ समारोह पूर्वक मनाई गई । प्रात: 7 बजे श्री दिगम्बर जैन मन्दिर धूसरपुरा से चल समारोह प्रारम्भ हुआ सर्व प्रथम धूसरपुरा जैन मन्दिर में भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक एवं शान्ति धारा की गई फिर भक्तिभाव के साथ भगवान महावीर की प्रतिमा को चाँदी के विमान में विराजमान कर शोभा यात्रा प्रारम्भ की गई । यह चल समारोह मुख्य मार्गो से होता हुआ महावीर विहार पहुँचा ।

चल समारोह मैं सबसे आगे वीर सेवा दल और उसके बाद त्रिमूर्ति जैन मिलन सेवा दल के कार्यकर्ता दिव्यघोष करते हुये चल रहे थे उनके पीछे जैन पाठशाला की छात्रायें डांडिया खेलते हुये चल रही थी । उसके बाद भजन मण्डली में शामिल श्रद्धालु भजन एवं धार्मिक गीतो से भगवान महावीर स्वामी की आराधना एवं वन्दना करते हुये चल रहे थे । उसके बाद भगवान महावीर स्वामी का विमान स्वधर्मी बन्धु अपने-अपने कंधों पर लेकर चल रहे थे । विमान को कन्धे पर लेने की होड़ लगी हुई थी, विमान के साथ सैकड़ो की संख्या में महिलायें मंगल गीत गाते हुये चल रही थी । मुख्य मार्गों पर जगह-जगह चल समारोह का स्वागत करते हुये नागरिको, संस्थाओं, एवं कई संगठनो ने जगह-जगह भगवान महावीर स्वामी की मंगल आरती उतारी और श्रद्धलुओं को जलपान, ठण्डाई आदि की व्यवस्था की गई ।

तत्पश्चात विमान चल समारोह महावीर बिहार पहुँचा जहां अभिषेक एवं शान्तिधारा कर पुण्यार्जन किया ।

इस वर्ष महावीर जयन्ति पर सकल जैन समाज गंजबासौदा ने एक अनूठी पहल कर गौशाला के लिये 108 ट्रॉली भूसा के बराबर की राशि गौशाला के लिये दान की । साथ एक ओर अनूठी पहल करते हुये दोपहर में नगर के सभी चौराहों पर मिष्ठान वितरण का कार्यक्रम रखा गया । जिसमें लगभग ग्याहर क्विंटल मिष्ठान का वितरण किया गया । दोपहर में पक्षियों के लिए दाना, अस्पताल में फल वितरण, औषधि वितरण व गौशाला पहुँचकर ग्रो गॉस का वितरण किया गया ।

शाम को महावीर बिहार में ही भगवान महावीर स्वामी की संगीतमय आरती हुयी उसके बाद भगवान का पालना झुलाया एवं भगवान महावीर स्वामी के जीवन चरित्र पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये ।

मृत्युभोज करना सही है क्या....???

मृत्युभोज पर होने वाले खर्च को एकत्र कर रचनात्मक कार्यो में लगाया जाए तो 10 वर्ष के अन्दर देश का चौमुखी विकास हो सकता है । औसतन देश में एक मृत्युभोज में लगभग 25-30 हजार खर्च आता है, इस तरह देश में लगभग 33 लाख मृतकों का मृत्युभोज करने में प्रतिवर्ष 50 अरब, 60 करोड़ रुपया मरने वाले के क्रिया कर्म में हलवा पूडी खिलाने में खर्च कर डालते हैं । जो कि असम, नागालैण्ड जैसे छोटे राज्यो के साल भर के बजट से भी ज्यादा है।

महाभारत युद्ध होने का था, अतः श्री कृष्ण ने दुर्योधन के घर जा कर युद्ध न करने के लिये संधि करने का आग्रह किया तो दुर्योधन द्वारा आग्रह ठुकराए जाने पर श्री कृष्ण को कष्ट हुआ और वह चल पड़े, तो दुर्योधन द्वारा श्री कृष्ण से भोजन करने के आग्रह पर कृष्ण ने कहा कि "**सम्प्रीति भोज्यानि आपदा भोज्यानि वा पुनैः**"

हे दुर्योधन-जब खिलोने वाले का मन प्रसन्न हो, खाने वाले का मन प्रसन्न हो, तभी भोजन करना चाहिए । लेकिन जब खिलाने वाले एवं खाने वालो के दिल में दर्द हो, वेदना हो । तो ऐसी स्थिति में कदापि भोजन नही करना चाहिए ।

हिन्दु धर्म में मुख्य 16 संस्कार बनाए है, जिसमें प्रथम संस्कार गर्भाधान एवं अन्तिम तथा 16 वाँ संस्कार अंत्येष्टी है । इस प्रकार जब सत्रहवां संस्कार बनाया ही नही गया तो सत्रहवाँ संस्कार तेरहवी संस्कार कहाँ से आ गया। इससे साबित होता है कि तेरहवी संस्कार समाज के चंद चालक लोगों के दिमाग की उपज़ है । किसी भी धर्मग्रंथ में मृत्यु भोज का विधान नहीं है बल्कि महाभारत के अनुशासन पर्व में लिखा है कि मृत्युभोज खाने वाले की ऊर्जा नष्ट हो जाती है । लेकिन जिसने जीवन पर्यन्त मृत्युभोज खाया हो, उसका तो ईश्वर ही मालिक है। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती व पं. श्रीराम विवेकान्द जैसे महान मनीषियों ने मृत्युभोज का जोरदार ढंग से विरोध किया है।

जिस भोजन बनाने का कृत्य जैसे लकड़ी फाड़ी जाती तो रो कर, आटा गूँथा जाता है तो रो कर, भोजन बनाया जाता है तो रो कर यानि हर कृत्य आँसुओं से भीगा हुआ है । ऐसे आँसूओं से भीगे निकृष्ट भोजन एवं तेरहवीं भोज का पूर्ण रुप से बहिष्कार कर समाज को एक सही दिशा देवें । जानवरो से सीखें, जिसका साथी बिछुड़ जाने पर वह उस दिन चारा नही खाता है । हम जबकि 84 लाख योनियों में श्रेष्ठ मानव, जवान आदमी की मृत्यु पर हलुवा पूड़ी खाकर शोक मनाने का ढोंग रचता है, इससे बढ़कर निंदनीय कोई दूसरा कृत्य हो नहीं सकता है । यदि आप इस बात से सहमत है, तो आप आज से ही संकल्प लें कि आप किसी के मृत्यु भोज को ग्रहण नही करेंगे । मृत्युभोज समाज में फैली कुरीति है व विकसित समाज के लिये अभिशाप है ।

– अनिल जैन, न्यू देवास रोड़, इन्दौर

आगामी अंक प्रतिशाभाली बच्चों की मेहनत को समर्पित रहता है । जो बच्चे दिन-रात मेहनत कर परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित कर अपने परिवार का नाम रोशन करते है । हम उन्हीं बच्चों के अभिभावकों से करबद्ध निवेदन करते है कि वे अपने बच्चों की इस सफलता को सभी के साथ बांटे । बस, आपको एक छोटा सा कार्य करना है, अपने बच्चों की अंकसूची की फोटोकॉपी के साथ फोटो लगाकर, उस पर अपने परिवार के मुखिया का नाम लिखकर हमारे कार्यालय 64, न्यू देवास रोड़ या 16, महारानी रोड़, इन्दौर पर भेजने का प्रयास करें । इस पूरे कार्य में मात्र 5-10 मिनिट खर्च होंगे और आपके होनहार बालक / बालिका का चित्र आगामी अंक में प्रकाशित हो जावेगा । .... तो देर ना करे, आप अपने बच्चे के लिए इतना तो कर ही सकते है ....

बायोडॉटा प्रारूप का विवरण

1. क्रमांक
2. प्रत्याशी का पूरा नाम
3. स्वयं / मामा का गोत्र
4. जन्म दिनांक
5. जन्म समय (लग्ने समयानुसार)
6. जन्म स्थान
7. शिक्षा
8. कद / वजन
9. वर्ण
10. व्यवसाय
11. वार्षिक आय
12. कुंडली मिलान
13. मंगली
14. पत्र व्यवहार का पता
15. फोन / मोबाईल नं.
16. प्रत्याशी का ईमेल

प्रत्याशी का नवीन फोटो

1. 001
2. **एकता सुगनचंद जैन**
3. फणीश/
4. 30.07.92
5. 13.05
6. झांसी
7. बी.एस.सी.
8. 5'4''/–
9. गोरा
10. सर्विस – यूनियन बैंक
11. –
12. हाँ
13. आंशिक
14. 5018, पटेल नगर, कुरमी कालोनी ओरई, जालौन
15. 9889082979, 8004543238
16. lvjn97@gmail.com

1. 002
2. **अजीतकुमार रामकुमार जैन**
3. निकोनिया/चोरिया
4. 11.08.87
5. 22.00
6. ग्वालियर
7. बी.कॉम
8. 5'6''/–
9. साफ
10. सर्विस–आइडिया कंपनी
11. 1.80 लाख
12. हाँ
13. –
14. जीवाजीगंज, हीरादास बाबा मंदिर के सामने, लश्कर ग्वालियर
15. 9827938199, 9806190138
16. -

1. 003
2. **अपेक्षा जैनेन्द्रकुमार जैन**
3. बिलाऊआ/गोट
4. 20.08.90
5. 10.40
6. सागर
7. एम.बी.ए.
8. 4'11''/43 कि.
9. गोरा
10. –
11. –
12. हाँ
13. हाँ
14. एच.आई.जी.18, पद्माकर नगर मक्रोनिया, सागर
15. 9425432894, 07582–239926
16. -

1. 004
2. **अंकित जैनेन्द्रकुमार जैन**
3. बिलाऊआ/गोट
4. 12.09.87
5. 02.20
6. सागर
7. बी.ई. (ई.सी.)
8. 5'4''/55 कि.
9. गेहुँआ
10. सर्विस – कॉग्निजेंट, पुणे
11. 9.50 लाख
12. –
13. –
14. एच.आई.जी.18, पद्माकर नगर मक्रोनिया, सागर
15. 9425432894, 07582–239926
16. -

1. 005
2. **आशीष सत्येन्द्रकुमार जैन**
3. दिवाकीर्ति/भंडारी
4. 11.10.87
5. 3.05
6. रायसेन
7. बी.ई. (आई.टी)
8. 5'7''
9. गोरा
10. सर्विस–आई लीड, इन्दौर
11. –
12. –
13. –
14. टी.यू. 78, इंडस सेटेलाइट ग्रीन्स वैलोद हाला देवास नाका के पास, इन्दौर
15. 9425652228, 9074569100
16. -

1. 006
2. **मयूर डॉ. संतोषकुमार जैन**
3. किरोरी
4. 18.07.88
5. 12.50
6. अहमदाबाद
7. बी.कॉम, एम.बी.ए
8. 5'7''/68 कि.
9. गेहुँआ
10. सर्विस – अहमदाबाद
11. 2.50 लाख
12. –
13. –
14. बी33, अजय टेनामेंट–2, ईश्वरकृपा सोसायटी, अमराईवाडी, अहमदाबाद
15. 9377381217
16. mayur6770@yahoo.in

1. 007
2. **यतीन्द्र (राहुल) चन्द्रमोहन जैन**
3. गोठ/फणीश
4. 11.09.86
5. 4.25
6. जरुवाखेड़ा
7. एम.ए, बी.एड
8. 5'10''/–
9. गोरा
10. अतिथि शिक्षक
11. 5.00 लाख
12. –
13. नहीं
14. मु. पो. जरुआखेड़ा (सागर)
15. 07879101114, 7584273273
16. -

1. 008
2. **सुशील सुरेशचंद जैन (विधुर)**
3. पटवारी/पंचरत्न
4. 02.07.83
5. 5.10
6. इन्दौर
7. बी.कॉम
8. 5'7''
9. गेहुँआ
10. व्यापार
11. 6.00 लाख
12. –
13. –
14. 40, आजाद नगर, मूसाखेड़ी रोड़, इन्दौर
15. 9753271580, 9424012460

नोट – 2 बच्चे

1. 009
2. **अनुषा पदमचंद भंडारी**
3. भंडारी/सिंघई
4. 3.09.86
5. 11.45
6. छतरपुर
7. बी.ई. (इलेक्ट्रीकल)
8. 5'3''
9. गोरा
10. कोचिंग
11. 1.80 लाख
12. हाँ
13. नहीं
14. गीता टॉकिज के पास, अम्बेडकर चौक, गंजबासौदा
15. 9977381101
16. –

आपके परिवार में संपन्न मांगलिक अवसर जैसे कि 25वीं या 50वीं विवाह वर्षगांठ या बच्चों के विवाह का शुभ अवसर हो या जन्मदिवस की सुहानी यादें इनका विज्ञापन 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित कर इस सुखद एहसास को समाजजनों के साथ सांझा कर सकते है । ऐसे अवसरों पर हम लाखों रुपये खर्च कर देते है, हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि अपने समाज की एकमात्र पत्रिका में मांगलिक प्रसंगों का विज्ञापन प्रदान कर गोलालारीय दर्शन को आर्थिक संबल कर पत्रिका के नियमित प्रकाशन में अद्वितीय सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी छोटी सी सहायता राशि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।

बधाई -

**** डीपीएस इदौर एवं एस के एम चेस अकादमी इंदौर की अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग प्राप्त शतरंज खिलाड़ी **नित्यता जैन** लगातार तीसरी बार म.प्र. अंडर 13 बालिका वर्ग में म.प्र. राज्य विजेता बनी है। यह खिताब नित्यता ने बैतूल, म.प्र. में दिनांक 19/4/16 से 21/4/16 तक संपन्न हुई एम.पी. स्टेट लेवल मिनी एण्ड सब जूनियर चैस चैंपियनशिप 2016 में हासिल किया। इसके पूर्व वह 2015 एवं 2014 में भी इसी वर्ग एवं सीनियर महिला सहित अन्य वर्गों में भी म.प्र. राज्य विजेता रह चुकी है। नित्यता का सन् 2016 में यह दूसरा राज्य खिताब है। अभी कुछ ही दिन पूर्व बीना, म.प्र. में मात्र 12 साल की उम्र में लगातार दूसरी बार वह म.प्र. की सीनियर महिला शतरंज विजेता बनी थी। नित्यता लगातार विगत 3–4 सालों से राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रेटिंग टूर्नामेंट में बेहतरीन शतरंज का प्रदर्शन कर रही है।

**** **श्री प्रवीण जैन,** संपादक दैनिक विश्व परिवार को उनकी आध्यात्मिक, साहित्यिक, शैक्षणिक, धार्मिक, पुरातत्वीय, पर्यावरण, शाकाहार एवं तीर्थ क्षेत्र शोध – खोजपूर्ण कार्यों में आपके सराहनीय योगदान के लिये परम पूज्य 108 आचार्य श्री श्रुतसागरजी मुनिराज ससंघ एवं परम श्रद्धेय मां श्री कौशलजी के पावन सानिध्य में 20वें 'ऋषभांचल पुरस्कार' से सम्मानित एवं अलंकृत किया गया । हम यही भावना रखते है कि आप आजीवन माँ जिनवाणी के प्रचार प्रसार में इसी तरह योगदान देते रहें ।

**** सीहोर शासकीय महिला पॉलीटेक्निक महाविद्यालय में विभागध्यक्ष पद पर पदस्थ **डॉ. पंकज जैन** द्वारा लिखित पाठ्यपुस्तक कार्यालय प्रबन्ध जयपुर से प्रकाशित हुई, यह पाठ्य पुस्तक राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा अनुशंसित पाठ्यपुस्तक है । डॉ. पंकज जैन द्वारा लिखित यह आठवीं पाठ्यपुस्तक है। इसके पूर्व व्यावसायिक अर्थशास्त्र, लागत लेखांकन, विपणन प्रबंध, सांख्यिकी, वित्तीय लेखांकन, अंकेक्षण, उद्यमिता विकास, विषय पर श्री जैन द्वारा पुस्तके लिखी जा चुकी है, जो विभिन्न विश्वविद्यालय एवं मण्डलों द्वारा अनुशंसित की जा चुकी है । म.प्र. शासन द्वारा आप चयनित लेखन में भी है । आपको राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर के रुप में सम्मानित किया जा चुका है । आप सीहोर नगर के जैन समाज के संगठन मंत्री, इंग्लिशपुरा जैन मंदिर के उपाध्यक्ष व सागरमल जैन स्मृति न्यास विदिशा के अध्यक्ष भी है ।

*** 1008 चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, विदिशा में सर्वसम्मति से **इंजी. अशोक मनोरिया** को अध्यक्ष, **श्री प्रकाशचंद जैन हुसनापुरवालों** को महामंत्री एवं **श्री खगेन्द्रकुमार जैन गोरवालों** को कोषाध्यक्ष चुना गया ।

**** **डॉ. सारिका जैन** को विज्ञान विषय में शोधकार्य पूर्ण कर पी.एच.डी. की उपाधि प्रो. एम.डी.तिवारी, कुलपति बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल व माननीय राज्यपाल श्री रामनरेश यादव द्वारा प्रदान की गयी । डॉ. सारिका जैन, डॉ. सिंघई संतोषकुमार जैन की पुत्री व इंजी. सौरभ जैन की धर्मपत्नी है।

*** **श्री शांतिकुमार जैन,** गंजबासौदा को दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप में वर्ष 2016 में संचालक पद पर मनोनीत किया गया है । आपने अपने नगर में दि. जैन सोशल ग्रुप के लिए समय समय पर अनेकों आयोजन कर समाज बंधुओं को एकसूत्र में बांध रखा है ।

*** झांसी के **श्री राजेश जैन बीड़ीवालों** को निर्विरोध पुनः भारत विकास परिषद बुंदेलखंड का प्रांतीय अध्यक्ष चुना गया है । आपने इस पद पर रहते हुए संस्था को नवीन उंचाईयां प्रदान कर समय समय पर अनेको कार्यक्रम संचालित किए है

***** नियुक्ती पर बधाईयाँ *****

श्री रविन्द्रकुमार जैन को गोलालारीय दर्शन विदिशा के लिए क्षेत्रीय प्रतिनिधि के रुप में नियुक्त किया गया है ।

श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन

*** श्री 1008 चंदप्रभ जिनालय, विदिशा में दिनांक 15 से 23 मार्च तक अष्टानिहका महापर्व पर 105 विभामति माताजी एवं विनयश्री माताजी के सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य पं. महेन्द्र जैन (बिस्किट) के कुशल निर्देशन में एवं अहमेन्द्र जैन गंजबासौदा के मधुर स्वरों के साथ श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। इसमें श्री अशोक कुमार जैन सौधर्म इन्द्र, श्री सुरेन्द्रकुमार कुबेर, अरविन्द कुमार दिवाकिर्ती इशान इंद्र, श्री संतोष कुमार शुक्रइंद्र , श्री अरविन्द कुमार जैन पी.पी. लांतेन्द्र, श्री कन्छेदीलाल राजा चक्रवर्ती एवं श्री संतोष कुमार जैन एस.ए.टी.आई. महा यज्ञनायक एवं श्री किशनचंद्र जैन यज्ञनायक, रमेश कुमार गुलगांव ने महेन्द्र के रुप में अंनतानंत सिद्धों की आराधना की । कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री ए.एल.फणीश द्वारा किया गया ।

*** दिनांक 10 से 19 अप्रैल तक नव श्रृंगारित मंदिर 1008 श्री महावीर जिनालय, किरी मोहल्ला, विदिशा में महावीर जयंती की पूर्व बेला में अनुमति त्याग प्रतिमाधारी बा. ब्र. श्रद्धेय श्री अशोक भैयाजी एवं पं. महेन्द्र कुमारजी के कुशल निर्देशन में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का अयोजन श्री हुकमचंद, श्री बाबूलाल, श्री दुलीचंद, श्री संतोष कुमार झावरवाले परिवार द्वारा किया गया । इस कार्यक्रम में गंजबासौदा की संगीत पार्टी भैया, अहमेन्द्र के मुखारबिंद से धर्मगंगा प्रवाहित हुई, जिसका उपस्थित समाजजनों ने पूर्ण मनोयोग से आनंद लिया ।

*** विधान श्रंखला को आगे बढ़ाते हुये दिनांक 1 से 9 मई तक किले अंदर जैन बड़ा मंदिर विदिशा में प्रतिष्ठाचार्य पं. महेन्द्रकुमार के कुशल निर्देशन में एवं 105 आर्यिका विभामति माताजी एवं विनयश्री माता जी के सानिध्य में अनंतानंत सिद्धों की आराधना श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन होगा ।

*** विशाल जैन पवा। तालबेहट। वीर बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध सिद्ध क्षेत्र पावागिरि जी की पावन धरा पर 28 फरवरी को आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का आचार्य पदारोहण दिवस एवं अष्टान्हिका महापर्व में 16 मार्च से 23 मार्च तक राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर विद्यासागर जी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद से आर्यिकारत्न पूर्णमति माताजी के ससंघ सानिध्य में श्री 1008 अष्टमण्डलीय सिद्धचक्र महामण्डल विधान, हवन एवं विश्वशान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया। आर्यिका 105 पूर्णमति माता जी के साथ आर्यिका शुभ्रमति, साधुमति, विशदमति, विपुलमति, मधुरमति, वात्सल्यमति एवं सतर्कमति माताजी के शुभाशीष एवं बाल बह्मचारी अनिल भैया, भोपाल के निर्देशन में प्रतिदिन अतिशय युक्त चमत्कारी बाबा मूलनायक भगवान पारसनाथ स्वामी का मस्तष्काभिषेक–शान्तिधारा, मंगल आरती एवं पूजन–विधान की क्रियाएं की गयी। ऐतिहासिक सिद्धचक्र महामण्डल विधान में श्रीमति सुशीला पाटनी आर.के.मार्बल किशनगढ़ ने आर्यिका माताजी को शास्त्र भेंट एवं ध्वजारोहण नेमीचन्द्र आगरा ने किया। संजय जैन एण्ड पार्टी के मधुर संगीत में सैकड़ों इन्द्र–इन्द्राणियों ने सिद्धों की आराधना करते हुए आत्म कल्याण की भावना के साथ कर्मों की निर्जरा के लिए अर्घों की आहूतिया दी। इस अवसर पर आर्यिका पूर्णमति माताजी ने कहा कि 'जिन के निकट आने से ही तुम निज' के समीप आओंगे, धार्मिक अनुष्ठानों से भावों की विशुद्धि बढ़ती है एवं भावों के परिणाम ही आत्म कल्याण में सहायक हैं। उन्होंने कहा कि हमें सत्य को स्वीकारते हुए समता भाव धारण करना चाहिए क्योंकि भावों के परिणाम बिगड़ने से हमारा जीवन बिगड़ जायेगा। इन्टरनेट और सैटेलाइट के जमाने में तुम घर बैठे संसार को देख सकते हो लेकिन कभी भी अपनी आत्मा को नहीं देख सकते, उसके लिए तो अपने ज्ञान चक्षुओं को ही खोलना होगा। आर्यिका माताजी ने श्रीपाल–मैना सुन्दरी चारित्र पर प्रकाश डाला एवं सिद्धचक्र विधान की महिमा का गुणगान किया। द्विगुण–द्विगुण विधान में 1024 अर्घों की पूर्णाहूति के उपरांत अन्तिम दिन हवन, विश्वशान्ति महायज्ञ के बाद रथ यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें भारी भीड़ उमड़ पड़ी, जन सैलाब से प्रांगण में वार्षिक मेला जैसा माहौल बन गया।

*** बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध सिद्ध क्षेत्र पावागिरि जी में 1 से 8 अप्रैल तक आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आर्यिका पूर्णमति माताजी ने कहा कि आत्म स्वरुप को प्रगटाने एवं आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए आज का मानव पुरुषार्थ कर रहा है, लेकिन सफल नहीं हो रहा है क्योंकि वह बाहरी आडम्बरों में लगा हुआ है जबकि प्रभु की सम्यक्त्व भक्ति ही मोक्ष मार्ग एवं मुक्ति का साधन है। उन्होंने कहा कि मानव का स्वभाव निर्विकल्प है लेकिन विकृत परिणाम के कारण वह जल्दी ही टेन्शन में आ जाता है जिससे अनन्त संसार में भटकना पड़ता है। माता जी ने कहा कि हमारी भावनाओं में कभी दरिद्रता नहीं होना चाहिए, हम अपने सुख–दुःख के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं, निज को साफ, पर को माफ और रब को याद करने में ही हमारा कल्याण है। इस विधान का आयोजन मुनि श्री सुव्रत सागर जी महाराज एवं आर्यिका संघ के मंगलमय सानिध्य एवं अनुमति त्याग प्रतिमाधारी ब्रह्मचारी अशोक भैया इन्दौर के निर्देशन में दीपचन्द्र महेन्द्र कुमार जैन गुडारे परिवार 'गोर' विदिशा की ओर से किया गया। इस अवसर पर मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज ने कहा कि जिन शासन में निमित्त और उपादान से सभी व्यवस्थाएं चलती हैं, निमित्त के बिना कभी भाग्य फलीभूत नहीं होता। उन्होंने कहा कि भला–लाभ और याद–दया ऐसे संयोग हैं कि दूसरों का भला चाहने से खुद का लाभ हो जायेगा और परमात्मा को याद करोगे तो वह निश्चित ही दया कर देगा। विधान में गोर परिवार के समस्त रिश्तेदारों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया । संचालन ज्ञानचन्द्र पुरा एवं आभार व्यक्त प्रवीण जैन 'दैनिक विश्व परिवार', झांसी ने किया।

मातृत्व विशेष पर....

सोशल मीडिया की नजर से.... एक विवाहित बेटी का पत्र उसकी माँ के नाम

''माँ तुम बहुत याद आती हो''
अब मेरी सुबह 6 बजे होती है और रात 12 बज जाती है, तक
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
सबको गरम गरम परोसती हूँ, और खुद ठंडा ही खा लेती हूँ, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
जब कोई बीमार पड़ता है तो
एक पैर पर उसकी सेवा में लग जाती हूँ,
और जब मैं बीमार पड़ती हूँ
तो खुद ही अपनी सेवा कर लेती हूँ, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
जब रात में सब सोते हैं,
बच्चों और पति को चादर ओढ़ना नहीं भूलती,
और खुद को कोई चादर ओढ़ने वाला नहीं, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
सबकी जरुरत पूरी करते करते खुद को भूल जाती हूँ,
खुद से मिलने वाला कोई नहीं, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
यही कहानी हर लड़की की शायद शादी के बाद हो जाती है
कहने को तो हर आदमी शादी से पहले कहता है
''माँ की याद तुम्हें आने न दूँगा''
पर, फिर भी क्यों ?
''माँ तुम बहुत
याद आती हो''

* विनम्र श्रद्धांजली *

श्रीमति गजराबाई धर्मपत्नी स्व. श्री कैलाशचंद, दुमदुमा का निधन 8 मार्च हो गया उनका जन्म बरधुवाँ में हुआ । दैवदुर्विपाक से शादी के एक वर्ष बाद ही उन्हें वैधव्य का दुःख देखना पड़ा । जैन धर्म में गहन आस्था श्रद्धा भक्ति के साथ ही वे इस दुःख को समताभाव के साथ स्वयं तथा अपने परिवार को सम्हालकर जीवन की एक मिसाल कायम की ।

श्री राहुल रमेशचंद जैन का 40 वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन 18 अप्रैल को इन्दौर में हो गया है । आप मिलनसार एवं धार्मिक प्रवृत्ति के युवा थे ।

श्री संतोषकुमार जैन का निधन 29 मार्च को अल्प बीमारी के बाद इन्दौर में निधन हो गया। आप स्व. श्री श्यामलाल चौमोवाले के ज्येष्ठ पुत्र थे ।

दिवंगत समाजजनों को गोलालारीय दर्शन परिवार अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नोट – शोक संदेश पूर्ण जानकारी (सचित्र) के साथ भेजने पर ही प्रकाशन संभव हो पायेगा । संदेश वाट्सएप्प पर ना भेजें ।– संपादक मंडल

नवदाम्पत्य की हार्दिक शुभकामनाएँ...

आयुष्मान सचिन (B.E.)

सुपौत्र : श्रीमती शांतिदेवी–स्व. श्री रामचरण जैन

सुपुत्र : श्रीमती सुमन–निर्मलकुमार जैन

(खेजड़ावाले), भोपाल

संग

का

आयुष्मति आयुषी (M.Com)

सुपौत्री : स्व. श्रीमती कमला–स्व. श्री प्रेमचंद जैन

सुपुत्री : श्रीमती शशि–राजेन्द्रकुमार जैन

इन्दौर

मंगल परिणय

26 अप्रैल 2016 को पीपुल्स मॉल ताजमहल, भोपाल में साआनंद संपन्न ।

वर पक्ष –

अशोक कुमार जैन (विदिप)

(प्रांतीय अध्यक्ष – भारतीय गौवंश रक्षण संवर्धन परिषद)

(कोषाध्यक्ष – दयोदय महासंघ)

श्रीमती आशा जैन (MIC सदस्य नगर निगम)

(भाजपा पार्षद, भोपाल)

निर्मलकुमार–सुमन जैन

वधु पक्ष –

श्रीमती शशि–राजेन्द्रकुमार जैन

श्रीमती शैली (नीलू)–मनोज बाकलीवाल

श्रीमती शिखा–मनीष श्रीवास्तव

प्रतिष्ठान – * शांति सीड्स प्रा. लि, भोपाल * ओम शांति मोटर्स, भोपाल व इन्दौर * श्री शांति एग्रो सेल्स, भोपाल * शीतल कार्पोरेशन, भोपाल * श्री दयोदय ऊर्जा एवं जैविक खाद प्रा. लि., भोपाल * द्वारकाधाम, भोपाल

विवाहोत्सव
की हार्दिक
शुभकामनाएँ...

हृदयांश अंशुल

सुपौत्र – श्री रतनचंदजी पंचरतन
सुपुत्र – श्रीमती समता–अरुण पंचरतन
खुरई (सागर) म.प्र.

का

शुभ विवाह

हृदयकणिका अनुभा

सुपौत्री – स्मृतिशेष श्री राजमलजी जैन
सुपुत्री – श्रीमती शोभा–अनिल जैन
विदिशा म.प्र.

दिनांक 16 अप्रैल को मंगलधाम, खुरई हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

चि. विपुल (सीए)

सुपौत्र : स्व. श्रीमती देवी–स्व. पूरनचंद जैन * सुपुत्र : श्रीमती शरद–श्रीयान्स जैन

का शुभ विवाह

सौ.कां. अपूर्वा

सुपुत्री : श्रीमती शांतादेवी–स्व.श्री विमलचंद जैन * सुपुत्री : श्रीमती लक्ष्मी–शिवदयाल जैन

के साथ
27 अप्रैल 2016 को
ग्वालियर में संपन्न हुआ।

श्रीमती सुधा - महेश चन्द्र जैन

श्रीमती चन्द्रप्रभा- डा. जय कुमार जैन

सौ.कॉं. इं. स्वाति

सुपौत्री - कीर्तिशेष श्रीमती देवका - खेमचन्द्र जैन
सुपुत्री - श्रीमती सुधा - महेश चन्द्र जैन, BHEL,Jhansi

का शुभ विवाह

चि. डा. अक्षय

सुपौत्र - श्रीमती बेनीबाई - कीर्तिशेष श्री भागचन्द जैन
सुपुत्र - श्रीमती चन्द्रप्रभा- शाहजी डा. जय कुमार जैन, बबीना-झाँसी

के साथ 22 अप्रैल 2016 को पवाजी में सम्पन्न हुआ।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित